Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद :हे वे लोगो जो ईमान लाए हो। उन लोगों में से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई उनको जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी ठट्ठा और खेल तमाशा बना रखा है और कुफ़्फ़ार को अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो यदि तुम मोमिन हो।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْد

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 7
अंक- 3

मूल्य
575 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान
बदर
Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

16 जमादी सानी 1442 हिज्री कमरी 20 सुलह 1401 हिज्री शम्सी 20 जनवरी 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ اَنْ يَّطَّوَّفَ بِهِمَا

के विषय में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की व्याख्या

(1643) उर्वा ने कहा मैं ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा और उनसे कहा : बतलाएं अल्लाह तआला जो फ़रमाता है : सफ़ा और मर्वा जो अल्लाह के निशानों में से हैं, अत: जिसने बैतुल्लाह का हज किया या उमरा किया उस पर कोई गुनाह नहीं कि उन दोनों का तवाफ़ करे। अल्लाह की क़सम !(इस से तो यह मालूम होता है) कि किसी पर गुनाह नहीं कि वे सफ़ा और मर्वा का तवाफ़ न करे। उन्होंने कहा : मेरे भांजे! क्या ही बुरी बात तुमने कही है। यह आयत अगर जैसा कि तुमने तावील की है उन्ही अर्थों में होती तो यूं होती : اجُنَاحَ عَلَيْهِ اَنْ لَّا يَتَطَوَّفَ بِهِمَاكَ कि उस पर कोई गुनाह नहीं कि इन दोनों का तवाफ़ न करे, लेकिन यह आयत अंसार की निसबत उत्तरी थी। वह इस्लाम क़बूल करने से पहले मनात बुत के लिए एहराम बाँधते। जिसकी वह मुशलल के पास पूजा किया करते थे। अत: जब हज या उमरा का एहराम बाँधते तो सफ़ा और मर्वा में तवाफ़ करना गुनाह समझते। जब उन्होंने इस्लाम क़बूल किया तो उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस विषय में दरयाफ़त किया, कहा : हे रसूल अल्लाह! हम गुनाह समझा करते थे कि सफ़ा और मर्वा का तवाफ़ करें। इस पर अल्लाह तआला ने यह वही नाज़िल की : ... اِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللّٰهِ हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती थीं : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन दोनों के दरमयान तवाफ़ को जारी कर चुके हैं इस लिए किसी को नहीं चाहिए कि उनके मध्य तवाफ़ छोड़े।

(सही बुख़ारी, भाग 3 किताबअल्हज, प्रकाशन 2008 क़ादियान)

जो लोग अल्लाह तआला की रज़ा पर राज़ी रहते, और उस की तक़दीर के लिए सिर झुकाते हैं वे बहुत खुले दिल से कहते हैं कि انا للہ وانا الیہ راجعون

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

शहादत का स्थान

तीसरा कमाल शहीदों का है। आम लोग तो शहीद के लिए इतना ही समझ बैठे हैं कि शहीद वह होता है जो तीर या बंदूक़ से मारा जाए या किसी और इत्तिफ़ाक़ी मौत से मर जाए। परन्तु अल्लाह तआला के निकट शहादत का यही स्थान नहीं है। मैं अफ़सोस से वर्णन करता हूँ कि सरहद के पठानों को यह भी एक बेफ़कूफ़ी वाली बात समाई हुई है कि वह अंग्रेज़ अफ़सरों पर आकर हमले करते हैं और अपने उपद्रव से इस्लाम को बदनाम करते हैं। उन्होंने समझ लिया है कि यदि हम किसी काफ़िर या ग़ैर मज़हब वाले को हलाक कर देंगे तो हम ग़ाज़ी होंगे और यदि मारे जाएंगे तो शहीद होंगे। मुझे उन कमीना फ़ितरत मुल्लाओं पर भी अफ़सोस है जवान उपद्रव करने वाले पठानों को उकसाते हैं। वे उन्हें नहीं बताते कि तुम यदि किसी व्यक्ति को बिना किसी मज़बूत दलील के क़तल करते हो तो ग़ाज़ी नहीं ज़ालिम ठहरते हो और यदि वहां हलाक हो जाते हो तो शहीद नहीं बल्कि ख़ुदकुशी करके हराम मौत मरते हो,क्योंकि अल्लाह तआला तो फ़रमाता है لَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ (अलबकर:196) वह अपने आपको ख़ुद हलाकत में डालते हैं और फ़साद करते हैं। मैं यक़ीन रखता हूँ कि वह सख़्त सज़ा के अधिकारी हैं। अत: आम लोगों ने तो शहादत इतनी समझ रखी है और शहीद का यही स्थान ठहरा लिया है परन्तु मेरे निकट शहीद की हक़ीक़त इस बात से हट कर के उसके लिए इस का जिस्म काटा जाए कुछ और ही है और वह एक कैफ़ीयत है जिसका सम्बन्ध दिल से है। याद रखो कि सिद्दीक़ नबी से एक सानिध्य रखता है और वह उसके दूसरें दर्जा पर होता है और शहीद सिद्दीक़ का साथी होता है। नबी में तो सारे कमाल होते हैं अर्थात वह सिद्दीक़ भी होता है और शहीद भी होता है सालिह भी होता है। परन्तु सिद्दीक़ और शहीद एक अलग अलग स्थान हैं। इस बेहस की भी आवश्यकता नहीं कि आया सिद्दीक़ , शहीद होता है या नहीं? वह कमाल का स्थान जहां हर एक बात आदत से हट

शेष पृष्ठ 15 पर

وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

अगर तुम अल्लाह तआला की नेअमतें गिनना चाहो तब भी गिन नहीं सकते फिर जिस तरह उसने यह दुनयवी नेअमतें नाज़िल की हैं क्यों रूहानी नेअमतें नाज़िल न करे और झूठे उपास्यों की तरह जो कोई ताक़त नहीं रखते गूँगा हो कर बैठ रहे

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु नहल आयत 18, 19 اَفَمَنْ يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ○ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

आयत का अनुवाद यह है कि क्या जिसने पैदा किया है वह उसकी तरह हो सकता है जिसने पैदा नहीं किया इस पर कुछ लोगों ने यह एतराज़ उठाया है कि कहना तो यह चाहिए था कि क्या जो पैदा नहीं करता वह उसकी तरह हो सकता है जो पैदा करता है (कश्शाफ़) क्योंकि मुक़ाबला में तुच्छ को सर्वोत्तम के मुक़ाबिल पर रखते हैं न कि सर्वोत्तम को तुच्छ के मुक़ाबिल पर। ताक़त के इज़्हार के लिए यह तो कह सकते हैं कि क्या बच्चा पहलवान की तरह हो सकता है परन्तु यह नहीं कह सकते कि क्या पहलवान बच्चा की तरह हो सकता है। यह एतराज़ बिल्कुल दरुस्त है। अगर इस आयत में ताक़त का इज़्हार उद्देशित होता तो ज़रूर यही कहा जाता कि क्या जो नहीं पैदा करता वह पैदा करने वाले के बराबर हो सकता है। परन्तु इस जगह यह मुराद ही नहीं। अल्लामा ज़मख़शरी इस प्रश्न को वर्णन करके इस का यह उत्तर देते हैं कि मशरिक ख़ुदा तआला की विशेषता अल्लाह के अतिरिक्त किसी और को दे कर गोया अल्लाह तआला को भी एक मख़लूक़ क़रार देते थे इस लिए यह फ़रमाया कि इस तरह ख़ुदा तआला पर आरोप लगता है तुम्हारे झूठे माबूदों का दर्जा तो नहीं बढ़ता। ख़ुदा तआला का ही दर्जा घटाना पड़ता है परन्तु क्या ख़ुदा तआला उन अदना वजूद के बराबर हो सकता है। मेरे नज़दीक यह उत्तर इस क़दर उचित नहीं जैसा कि एतराज़ जो उन्होंने

शेष पृष्ठ 8 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

क़ुरआन-ए-मजीद की हिफ़ाज़त करने वाला अल्लाह तआला है (क़ुरआन-ए-मजीद की 26 आयतों पर आरोपों के उत्तर)

मुहम्मद हमीद कौसर, नाज़िर दावत इलाल्लाह मर्कज़िया उत्तर भारत क़ादियान (भाग-4)

जमाअत अहमदिया और जिहाद का अक़ीदा

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह भविष्यवाणी फ़रमाई थी कि मैं उम्मत-ए- मुहम्मदिया में जिस मसीह की आमद (आने) की खुशखबरी दे रहा हूँ वह "منکم" मुस्लमानों में से ही एक व्यक्ति होगा और वही इमाम महदी होगा। आपने फ़रमाया وَلَا الْمَهْدِیُّ اِلَّاعِیْسَی اِبْنُ مَرْیَمَ (सुन्न इब्ने माजा, कीताबुल फितन, बाब शिद्दतुल अल्ज़मान) अर्थात् महदी के अतिरिक्त और कोई ईसा इब्ने-ए-मरियम नहीं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आने वाले मसीह-ओ-महदी के बारे में यह भी ख़बर दी थी कि वह जिज़्या को स्थगित कर देगा। और कुछ रवायात में जिज़्या की जगह "الحرب" भी आया है अर्थात् तलवार से जिहाद स्थगित कर देगा। स्पष्ट रहे कि "जिहाद" अरबी भाषा का शब्द है जो " جُھدٌ " से बना है जिसके अर्थ मशक़्क़त बर्दाश्त करना है और जिहाद के अर्थ हैं किसी काम के करने में पूरी कोशिश करना और किसी किस्म की कमी न छोड़ना हम उर्दू में भी कहते हैं जद्दो जहद करना। क़ुरआन-ए-मजीद और अहादीस में जिहाद की बहुत सी क़िस्में वर्णन हुई हैं। हदीस में आता है।

عن جابر قال قدم النبی صلی اللہ علیہ وسلم من غزاۃ لہ فقال لھم رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ''قد متم خیر مقدم وقد متم من الجھاد الاصغر اِلی الجھاد الاکبر قالو وما الجھاد الا کبر یا رسول اللہ قال مجاھدۃ العبد ھواہ ۔

(تاریخ بغداد ذکرمن اسمہ ھارون ،الجزء6صفحہ171)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक ग़ज़वा से वापस तशरीफ़ ला रहे थे आपने वे लोग जो ग़ज़वा से वापस आए थे उनको संबोधित करते हुए फ़रमाया तुम्हारी आमद बहुत अच्छी आमद है और तुम असग़र (अर्थात् छोटे जिहाद से जिहाद) अकबर की तरफ़ आए हो सहाबा ने पूछा कि हे अल्लाह के रसूल जिहाद अकबर किया है आपने उत्तर में फ़रमाया बंदे का अपनी इच्छाओं के ख़िलाफ़ जिहाद।

पहले दर्जे का जिहाद वह है जो इन्सान अपने नफ़्स के ख़िलाफ़ करता है। इस्लाम में सबसे बड़ा जिहाद यह है कि इन्सान अपने आप को गुनाहों से बचाए, नेक और अच्छे काम करे और जब एक मुस्लमान अपने आपको पाक कर लेता और बाअमल बन जाता है तो उसे दूसरे दर्जे का जिहाद (कबीर) करने का हुक्म है। जैसा कि फ़रमाया (جَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا(سورۃ الفرقان ،سورۃ نمبر 25آیت نمبر 53 तो क़ुरआन-ए-मजीद की शिक्षा को दूसरों तक प्रेम, तर्कों से पहुंचा। जमाअत अहमदिया के अधिकतर लोगों ख़ुदा तआला के फज़्ल से दिन रात जिहाद कबीर में व्यस्त हैं, तीसरे दर्जे का जिहाद सबसे छोटा जिहाद जिहाद असग़र कहलाता है। यह केवल उस वक़्त करने की आज्ञा है जबकि मुस्लमान रुबिना अल्लाह कहने की वजह से ज़ुलम किए जाएं । और ऐसी हालत में यदि मुस्लमान छोटा जिहाद करेंगे तो अल्लाह तआला का वादा है व इन इल्लल्लाह एलाय नस लकदी (सूरत उल-हज्ज ,सूरत नंबर22आयत नंबर40) निसंदेह अल्लाह उनकी सहायता पर पूरी क़ुदरत रखता है, आज के जो मुस्लमान और उनके मौलवी जिहाद, जिहाद का नारा लगा कर मासूम इन्सानों को क़तल करते और करवाते हैं इसका इस जिहाद से दूर का भी ताल्लुक़ नहीं है जिसे क़ुरआनी जिहाद कहा जाता है । यदि यह क़ुरआनी जिहाद होता तो ज़रूर अल्लाह तआला उन्हें अपने वादे के अनुसार प्रभुत्व प्रदान करता। पिछले एक सौ वर्ष में उनकी हर मैदान में शिकस्त और पराजय इस बात का स्पष्ट इशारा बनी है कि यह क़ुरआन का जिहाद नहीं। यदि यह वह होता तो उन्हें ज़रूर विजय नसीब होती। फिर सय्यदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का स्पष्ट फ़रमान है मुस्लिम और मोमिन वह है जिसकी भाषा और हाथ से लोगों के जान-ओ-माल महफ़ूज़ रहें। यदि आज अपने आपको मुस्लमान मोमिन कहलाने वालों के हाथों से कहीं मासूम इन्सानों का क़तल होता है तो वही बताएं कि इस फ़रमान-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्या अर्थ है ? अत: साबित हुआ कि हदीस रसूलुल्लाह अल्लाह अलैहि वसल्लम के अनुसार मुस्लमान और मोमिन तो ऐसा करे गा नहीं। यदि कोई करता है तो फिर वह इस्लाम दुश्मन ताक़तों के इशारे पर इस्लाम और हक़ीक़ी मुस्लमानों को बदनाम करने के लिए ऐसा कर रहा होगा। यह बात भी दरुस्त है कि पिछली सदी में दुनिया के कुछ मुल्कों और इलाक़ों में याजूज-ओ-माजूज और दज्जाल की सियासत और ख़ुद मुस्लमानों की अपनी ग़लतियों के नतीजा में मुस्लमान दूसरी क़ौमों से युद्ध में लड़ते रहे हैं और अब तक यह सिलसिला जारी है। स्पष्ट रहे कि यह सबकी सब सयासी लड़ाईयां झगड़े क़तल-ओ-ग़ारत है। उनका इस्लाम और क़ुरआन से कोई भी ताल्लुक़ नहीं। और यदि उन्हें कोई इस्लाम की तरफ़ मंसूब करता है तो वह सख़्त ग़लती पर है। यहां यह प्रश्न पैदा होता है कि इस्लाम की शांतिपूर्ण शिक्षा के होते हुए, जिहाद का ग़लत मफ़हूम मुस्लमानों में कहाँ से सरायत कर गया। यदि तारीख़ का गहराई से अध्यन किया जाए तो इस प्रश्न का उत्तर आसानी से मिल जाएगा। इस्लाम की इबतिदाई सदियों में इस्लाम की ग़ैरमामूली प्रगतियो को देखकर इस्लाम के दुश्मन समझ गए कि अब इस्लाम का मुक़ाबला हमारे बस की बात नहीं रही। दूसरी तरफ़ वह इस्लाम को तबाह-ओ-बर्बाद और नाकाम-ओ-बदनाम करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने मुस्लमानों में शामिल हो कर कुछ ग़लत अक़ायद मुस्लमानों में फैलाने शुरू किए।

जब यहूद और ईसाइयों ने देखा कि तौरात और इंजील में तो इंतिहाई जारिहाना और ज़ालिमाना शिक्षा भी दी गईं हैं और इसके मुक़ाबिल क़ुरआन-ए-करीम में इंतिहाई मुतवाज़िन और शांतिपूर्ण शिक्षा दी गईं हैं तो उन्होंने जिहाद के शब्द की ग़लत तफ़सीर मुस्लमानों में फैलाना शुरू की, और दूसरी तरफ़ मतलब परस्त मुस्लमान कहलाने वाले बादशाहों को अपनी सल्तनतों की वुसअत के लिए जिहाद की ग़लत तफ़सीर की ज़रूरत थी, इसलिए उन्होंने अपने ज़माने के उल्मा के माध्यम से ग़लत तफ़सीर को ख़ूब रिवाज दिया और नतीजा यह निकला कि आज जिहाद की ग़लत तफ़सीर को ही असल तफ़सीर समझ कर इस्लाम के सम्बन्ध में बहुत सी ग़लत-फ़हमियाँ पैदा कर दी गईं। इस ग़लतफ़हमी और इस तरह की और बहुत सी ग़लत-फ़हमियों के अज़ाला के लिए अल्लाह तआला ने हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम को मसीह मौऊद और इमाम महदी बना कर भेजा। और उन्होंने ऐलान फ़रमाया

"आज से इन्सानी जिहाद जो तलवार से किया जाता था ख़ुदा के हुक्म के साथ बंद किया गया । अब इसके बाद जो व्यक्ति काफ़िर पर तलवार उठाता है और अपना नाम ग़ाज़ी रखता है वह उस रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की न-फ़रमानी करता है जिसने आज से तेराह सौ बरस पहले फ़र्मा दिया है कि मसीह मौऊद के आने पर समस्त तलवार के जिहाद ख़त्म होजाएंगे। सवाब मेरे ज़हूर के बाद तलवार का कोई जिहाद नहीं। हमारी तरफ़ से अमान और सलहकारी का सफ़ैद झंडा बुलंद किया गया है। ख़ुदा तआला की तरफ़ दाअवत करने की एक राह नहीं। अत: जिस राह पर नादान लोग एतराज़ कर चुके हैं, ख़ुदा तआला की हिक्मत और मस्लिहत नहीं चाहती कि उसी राह को फिर इख़तियार किया जाए। उसकी ऐसी ही उदाहरण है कि जैसे जिन निशानों की पहले तक़ज़ीब हो चुकी वह हमारे सय्यद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नहीं दिए गए।"

(रुहानी ख़ज़ायन भाग 16 पृष्ठ 28)

واعلموا ان وقت الجھاد السیفی قد مضی ولم یبق الاجھاد القلم و الدعا و آیات عظمی (حقیقۃ المھدی، روحانی خزائن، جلد 14، صفحہ 457)

अर्थात् जान लो कि अब तलवार के जिहाद का वक़्त नहीं है बल्कि क़लम और दुआ और बड़े बड़े निशानों के माध्यम से जिहाद करने का ज़माना है ।

यहां इख़तिसार से एक और बात का वर्णन भी बहुत ज़रूरी है। आजकल दुनिया में मानों एक फ़ैशन बन गया है कि यदि दुनिया के किसी कोने में दहश्तगर्दी का कोई वाक़िया हो जाएगी तो उसे हमारे मुल्क और दुनिया के कुछ अख़बारात और प्रकाशन के संस्थानों ने तुरंत इस्लामिक दहश्तगर्दी का नाम दे देते हैं। ऐसे अख़बारात पर हैरत होती है, यदि किसी दूसरे मज़हब के लोग इसी किस्म की कार्यवाहीयां करें तो उनकी कार्यवाहियां उनके मज़हब की तरफ़ मंसूब नहीं करते। उदाहरण के तौर पर यदि अमरीका हीरोशीमा व नागा साक़ी पर एटम-बम गिराए या अमरीका और बर्तानिया

शेष पृष्ठ 15 पर

ख़ुत्बः जुमअः

कोई व्यक्ति मौत की इच्छा न करे क्योंकि यदि वह नेक है तो नेकियों में बढ़ेगा और अल्लाह तआला के फ़ज़्लों का वारिस होगा और यदि बुरा है तो तौबा की तौफ़ीक़ मिल जाएगी

अब्दुल्लाह बिन शद्दाद कहते थे कि मैंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की हिचकियाँ सुनी और मैं आख़िरी सफ़ में था

आप यह तिलावत कर रहे थे, اِنَّمَآ اَشۡكُوۡا بَثِّیۡ وَ حُزۡنِیۡۤ اِلَی اللّٰہِ अर्थात मैं तो अपने दुःख और पीढ़ा को केवल अल्लाह के समक्ष माँगा करता हूँ

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद फ़ारुके आज़म हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताओं और गुणों का वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 19 नवम्बर 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु की पहली हालत और इस्लाम क़बूल करने के बाद जो इन्क़िलाब उनकी हालतों में आया उसका वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक उदाहरण हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की भी दी है। यह उदाहरण जबकि मैं पहले वर्णन कर चुका हूँ लेकिन यहां इस हवाले से वर्णन कर देता हूँ। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया।'' देखो सहाबी किस तरह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा बने और किस तरह उन्होंने बड़े बड़े दर्जे हासिल किए। इसी तरह कि कोशिश की अन्यथा ये वही लोग थे जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जानी दुश्मन थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गालियां देते थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद दूसरे ख़लीफ़ा हुए हैं आरंभ में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ऐसे सख़्त दुश्मन थे कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़तल करने के लिए घर से निकले थे। रास्ता में एक व्यक्ति मिला जिसने पूछा कहाँ जा रहे हो? उन्होंने कहा मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को क़तल करने जाता हूँ। उसने कहा पहले अपनी बहन और बहनोई को तो क़तल कर लो जो मुस्लमान हो गए हैं फिर मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को मारना। यह सुनकर वह गुस्से से भर गए और अपनी बहन के घर की तरफ़ रवाना हो गए। आगे जा कर देखा तो दरवाज़ा बंद था और एक व्यक्ति क़ुरआन-ए-करीम सुना रहा था और उनकी बहन और बहनोई सुन रहे थे। उस वक़्त तक पर्दे का हुक्म नाज़िल नहीं हुआ था। "इसलिए वह सहाबी अन्दर घर में बैठे थे।'' हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने दरवाज़ा खटखटाया और कहा खोलो। उनकी आवाज़ सुनकर अंदर वालों को डर पैदा हुआ कि मार देंगे इस लिए उन्होंने दरवाज़ा नहीं खोला। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा यदि दरवाज़ा नहीं खोलोगे तो मैं तोड़ दूँगा। इस पर उन्होंने क़ुरआन-ए-करीम सुनाने वाले मुस्लमान को छुपा दिया और बहनोई भी छिप गया। केवल बहन ने सामने आकर दरवाज़ा खोला। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पूछा : बताओ क्या कर रहे थे और कौन व्यक्ति था जो कुछ पढ़ रहा था? उन्होंने डर के मारे टालना चाहा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा जो पढ़ रहे थे मुझे सुनाओ। उनकी बहन ने कहा : आप उसकी बे-अदबी करेंगे इसलिए चाहे हमें जान से मार दें हम नहीं सुनाएँगे। उन्होंने कहा नहीं मैं वादा करता हूँ कि बे-अदबी नहीं करूँगा अर्थात क़ुरआन-ए-करीम की बे-अदबी नहीं करूँगा।'' इस पर उन्होंने क़ुरआन-ए-करीम सुनाया जिसे सुनकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रो पड़े और दौड़े दौड़े रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास गए। तलवार हाथ में ही थी। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें देखकर कहा। उमर यह बात कब तक रहेगी? यह सुनकर वह रो पड़े और कहा मैं निकला तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मारने के लिए था लेकिन ख़ुद शिकार हो गया हूँ।"

तो यह ख़ुलासा है इस सारे लंबे वाक़िया का जो पहले वर्णन हो चुका है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं "तो पहले यह हालत थी जिससे उन्होंने तरक़्क़ी की। फिर यही सहाबा थे जो पहले शराब पिया करते थे। आअत:में लड़ा करते थे" और सहाबा का भी वर्णन है। "और कई किस्म की कमज़ोरियाँ उनमें पाई जाती थीं लेकिन जब उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़बूल किया और दीन के लिए हिम्मत और कोशिश से काम लिया तो न केवल ख़ुद ही आला दर्जे पर पहुंच गए बल्कि दूसरों को भी उच्च स्थान पर पहुंचाने का माध्यम हो गए। वह पैदा ही सहाबी नहीं हुए थे बल्कि इसी तरह के थे जिस तरह के और थे परन्तु उन्होंने अमल किया और हिम्मत दिखाई तो सहाबी हो गए। आज भी यदि हम ऐसा ही करें तो सहाबी बन सकते हैं।" (महिलाों का दीन से वाक़िफ़ होना ज़रूरी है, अनवारुल उलूम भाग 4 पृष्ठ 38-39)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़शीयत-ए-इलाही की क्या हालत थी? इस बारे में रिवायत है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि यदि दरिया-ए-फ़ुरात के किनारे कोई बकरी भी ज़ाए हो कर मर गई तो मुझे डर है कि अल्लाह ताआला मुझसे क़ियामत के दिन उसके बारे में प्रश्न करेगा। (सीरत उमर बिन ख़त्ताब अज़ इब्ने अल् जोज़ी, पृष्ठ 140 अल् मत्बा अल् मिसृया अल् अज़हर)

एक रिवायत में इस तरह वर्णन हुआ है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि यदि दरिया-ए-फ़ुरात के किनारे कोई ऊंट भी ज़ाए हो कर मर गया तो मुझे डर है कि अल्लाह ताआला मुझसे उसके बारे में सवाल करेगा।

(अल् तब्कातुल कुबरा, भाग 3 पृष्ठ 232 दारुल क़ुतुब इल्मिया 1990)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक दिन मैं उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ बाहर गया यहां तक कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो एक बाग़ में दाख़िल हुए। मेरे और आप रज़ियल्लाहु अन्हो के मध्य एक दीवार रोक थी। आप रज़ियल्लाहु अन्हो बाग़ के अंदर थे। मैंने उस वक़्त आप रज़ियल्लाहु अन्हो को यह कहते सुना। वाह वाह हे ख़त्ताब के उमर! तू अमीरुल मोमेनीन है। अल्लाह की क़सम तू ज़रूर अल्लाह से डर अन्यथा वह ज़रूर तुझे अज़ाब देगा।

(मौअता इमाम मालिक किताब الكلام و العينة والتقى باب ما جاء فى التقى।, पृष्ठ 601 रिवायत नंबर 1867 मकतबा दारुल फ़िक़र बेरूत)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की अँगूठी पर यह जुमला लिखा था कि كَفٰى بِالْمَوْتِ وَاعِظًا يَا عُمَرُ ك कि हे उमर धर्मोपदेशक होने के लिहाज़ से मौत काफ़ी है।(अल् इस्तेयाब फ़ी मारफ़तिल असहाब, भाग 3 पृष्ठ 236 باب حرف العين ''عمر بن الخطاب प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.) अर्थात यदि इन्सान मौत को याद रखे तो वही नसीहत करने वाली एक चीज़ है और अपनी हालत को ठीक रखने के लिए यही चीज़ काफ़ी है।

अब्दुल्लाह बिन शद्दाद कहते थे कि मैंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की हिचकियाँ सुनी और मैं आख़िरी सफ़ में था। आप यह तिलावत कर रहे थे। اِنَّمَآ اَشۡكُوۡا بَثِّیۡ وَ حُزۡنِیۡۤ اِلَی اللّٰہِ (यूसुफ़ : 87) अर्थात मैं तो अपने दुःख और पीढ़ा की केवल अल्लाह के हुज़ूर फ़र्याद करता हूँ। (सही अल् बुख़ारी, किताब अल् इज़न, اِذَا بَكَى الْاِمَامُ فِي الصَّلٰوةِ)

इस रिवायत को एक ख़ुतबे में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह ने भी वर्णन फ़रमाया था और इसकी कुछ तफ़सील अपने शब्दों में भी इस तरह वर्णन की थी कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन शद्दाद कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु एक दफ़ा नमाज़ पढ़ा रहे थे और मैं आख़िरी सफ़ में था लेकिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की रोने की आवाज़ सुन रहा था। वह यह तिलावत कर रहे थे। اِنَّمَآ اَشۡكُوۡا بَثِّیۡ وَ حُزۡنِیۡۤ اِلَی اللّٰہِ (यूसुफ़:87) कि मैं तो अपने अल्लाह ही के सामने अपने सारे दुख रोया करूँगा। किसी और के सामने मुझे ज़रूरत नहीं है। अत: जो ख़ुदा की याद में गुम रहते हैं उनको ख़ुदा के सिवा किसी और का दरबार मिलता ही नहीं जहां वह अपने ग़म और दुख रोएँ और अपने सीनों के बोझ हल्के करें। यह रिवायत करने वाले कहते हैं कि पिछली सफ़ में था वहां तक मुझे हज़रत उमर

रज़ियल्लाहु अन्हु के सीने के गिड़गिड़ाने की आवाज़ आ रही थी।

(उद्धरित खुत्बाते-ए-ताहिर भाग 13 पृष्ठ 248-249)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पुराने ख़िदमत करने वालों और क़ुर्बानी करने वालों का किस तरह ख़्याल रखा करते थे। इस बारे में रिवायत है। सालबा बिन अबू मालिक कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो ने अहल-ए-मदीना की महिलाों में से कुछ को ओढ़नियाँ तक़सीम कीं। कोई अच्छी किस्म की ओढ़नियाँ आई थीं उनमें से एक अच्छी ओढ़नी बच गई। जो लोग उनके पास थे उनमें से किसी ने उनसे कहा कि हे अमीरुल मोमेनीन आप रज़ियल्लाहु अन्हो यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उस बेटी को दें जो आप रज़ियल्लाहु अन्हो के पास है। उसकी मुराद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो की बेटी हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा थीं। हज़रत उमर ने कहा : उम्म-ए-सुलैत इसकी अधिक हक़दार हैं। कहा नहीं, उम्मे सुलैत उसकी अधिक हक़दार हैं और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि हज़रत उम्मे सुलैत उन अंसारी महिलाों में से हैं जिन्हों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बैअत की थी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा वे जंग-ए-अहद के दिन हमारे लिए मशकें उठा कर लाती थीं।
(सही अल् बुख़ारी, किताब अलमग़ाज़ी, बाब वर्णन उम्मे सुलैत, हदीस 4071)

फिर क़ुर्बानी करने वालों के क़रीबियों को भी नवाज़ने का वर्णन एक रिवायत में मिलता है। ज़ैद बिन असलम ने अपने बाप से रिवायत की। कहते थे कि मैं हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ बाज़ार गया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से एक जवान महिला पीछे से आ मिली और कहने लगी हे अमीरुल मोमेनीन मेरा पति फ़ौत हो गया है और छोटे छोटे बच्चे छोड़ गया है। अल्लाह की क़सम! बकरी के पाए भी उन्हें नसीब नहीं। न उनकी कोई खेती है और न दूधेल जानवर अर्थात दूध देने वाले जानवर और मुझे डर है कि कहीं उनको कहतसाली न खा जाए और मैं ख़ुफ़ाफ़ बिन ईमा ग़फ़्फ़ारी की बेटी हूँ और मेरे पिता हुदैबिया में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ मौजूद थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु यह सुनकर ठहर गए और आगे नहीं चले। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा वाह वाह बहुत नज़दीक का ताल्लुक़ है। इसके बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने वाअत:जा कर एक मज़बूत ऊंट लिया जो घर में बंधा था और दो बोरीयां अनाज से भरीं और उन पर लादीं और उनके मध्य वर्ष भर के ख़र्च के लिए माल और कपड़े भी रखे। फिर उस ऊंट की नुकेल उस महिला के हाथ में दे दी और कहा उसे ले जाओ। यह ख़त्म नहीं होगा कि अल्लाह तुम्हें और देगा। एक व्यक्ति कहने लगा कि अमीरुल मोमेनीन आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसको बहुत दे दिया है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा तेरी माँ तुझे खोए अर्थात नाराज़गी का इज़हार किया कि अल्लाह की क़सम मैं तो उसके बाप और उसके भाई को अब भी देख रहा हूँ कि उन्होंने अर्से तक एक क़िला का घेराव किए रखा जिसे उन्होंने आख़िर विजय कर लिया। फिर उसके बाद सुबह के वक़्त हम उन दोनों के हिस्से अपने मध्य तक़सीम करने लगे अर्थात वह क़िला उन दोनों ने विजय किया था जिसकी ग़नीमत कुल मुस्लमानों को मिली। इस प्रकार हमने उनके हिस्सा में से बाँटा। (सही अल् बुख़ारी, किताब अलमग़ाज़ी, बाब ग़ज़वा हुदयबिया, हदीस 4161- 4160) अत: यह वजह है कि यह उसकी हक़दार बनती है कि उसे कुछ दिया जाए।

बूढ़ी और माज़ूर और ज़रूरतमंद महिलाों और लोगों का किस तरह ख़्याल रखा करते थे इस बारे में रिवायत है। हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि एक दफ़ा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रात की तारीकी में घर से निकले तो हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु ने देख लिया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु एक घर में दाख़िल हुए। फिर दूसरे घर में दाख़िल हुए। जब सुबह हुई तो हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु उन घरों में से एक घर में गए, वहां एक नाबीना बढ़्या बैठी हुई थी। हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस से पूछा जो व्यक्ति तेरे पास रात को आता है वह क्या करता है? बढ़्या ने उत्तर दिया वो काफ़ी अरसा से मेरी ख़िदमत कर रहा है और मेरे काम काज को ठीक करता है और मेरी गंदगी दूर करता है। यह सुनकर हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु ने नदामत से अपने आपको कहा हे तल्हा! तेरी माँ तुझे खोए। कितने अफ़सोस की बात है कि तू उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की लग़ज़िशों की खोज में है और यहां तो मामला ही कुछ और है। (सीरत उमर बिन ख़त्ताब अज़ इब्ने अल् जोज़ी, पृष्ठ 58 अल् मत्बा अल् मिसृया अल् अज़हर) प्रजा की ख़िदमत के ये अज़ीम मयार थे जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़ायम फ़रमाए।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की लोगों, ज़रूरतमंदों, महिलाों, बच्चों की ज़रूरीयात पूरी करने की बहुत सी रवायात हैं कि किस तरह अल्लाह ताआला का ख़ौफ़ रखते हुए आप रज़ियल्लाहु अन्हो पूरी किया करते थे और किस तरह बेचैन हो जाया करते थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो जब देखते थे कि किसी की ज़रूरत पूरी नहीं हुई और वह आप रज़ियल्लाहु अन्हो की रियाया में है तो बहुत बेचैन होते थे। कुछ उदाहरणों में पिछले हफ़्तों के जुम्मो में मुख़्तलिफ़ हवालों से पेश कर चुका हूँ उदाहरणत: किस तरह एक अवसर पर आपने जब रात को एक महिला से उसके बच्चे के रोने की वजह पूछी तो उसने कहा कि क्योंकि उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने दूध पीते बच्चों का राशन निर्धारित नहीं किया इसलिए मैं बच्चे को आहार खाने की आदत डालने के लिए दूध नहीं दे रही और यह भूक से रो रहा है। यह बात सुनकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बेचैन हो गए और तुरंत खाने पीने के सामान का इंतिज़ाम किया और फिर ऐलान किया कि आइन्दा से हर पैदा होने वाले बच्चे को भी राशन मिला करेगा।

(उद्धरित अल् बिदाया वन नहाया लेइब्ने कसीर, जुज़ अल् आशिर, पृष्ठ185 -186 प्रकाशन दार हिजर 1997 ई.)

इसी तरह एक अवसर पर एक मुसाफ़िर महिला जिसके पास खाने को कुछ नहीं था और रात को उसे डेरा डालना पड़ा और बच्चे भूक से रो रहे थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो को जब रात को इस का इलम हुआ तो तुरंत स्टोर से खाने पीने का सामान उठा कर उस तक पहुंचाया और बेचैन हो गए और उस वक़्त तक आपको चैन नहीं आया जब तक कि खाना पका कर उन बच्चों को खिला कर उन्हें हँसता न देख लिया फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो उस जगह से वाअत:हुए। (उद्धरित अज़ तारीख़ अल तिबरी ले लेइब्ने जरीर, 5 पृष्ठ 62 ثم دخلت سنة ثلاث عشرين /ذكر بعض سيره...प्रकाशन दारुल फ़िक़र बेरूत 1998 ई.)

हज़रत मुस्लेह मौउद रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन किया कि "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को देख लो उनके रोब और दबदबे से एक तरफ़ दुनिया के बड़े बड़े बादशाह काँपते थे। क़ैसर-ओ-किसरा की हुकूमतें तक कापं जाया करती थीं परन्तु दूसरी तरफ़ अँधेरी रात में एक बदवी महिला के बच्चों को भूखा देखकर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जैसा महान इन्सान तिलमिला उठा और वह अपनी पीठ पर आटे की बोरी लाद कर और घी का डिब्बा अपने हाथ में उठा कर उनके पास पहुंचा और उस वक़्त तक वाअत:नहीं लौटा जब तक कि उसने अपने हाथ से खाना पका कर उन बच्चों को न खिला लिया और वह आराम से सौ न गए।"

(सैर-ए-रुहानी 6)(अनवारुल उलूम, जल्द 22 पृष्ठ 596)

फिर एक वाक़िया हज़रत इब्ने उमर से मर्वी है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जब शाम से मदीना लौट कर आए तो लोगों से अलग हो गए ताकि उनके बारे मालूम करें। अर्थात इस क़ाफ़िले से अलग हो गए और एक तरफ़ चले गए ताकि लोगों के बारे में हाल चाल मालूम करें तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो का गुज़र एक लकड़ी का काम करने वाले के पास से हुआ जो अपने ख़ेमे में थी। आप रज़ियल्लाहु अन्हो उससे पूछगिछ करने लगे तो उसने कहा हे व्यक्ति उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने क्या-किया? आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि वह उधर ही तो है और शाम से आ गया है तो इस महिला ने कहा कि ख़ुदा उसको मेरी तरफ़ से उत्तम प्रतिफल न दे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया : तुझ पर अफ़सोस है क्यों? अर्थात तुम ऐसा क्यों कहती हो? उसने कहा कि जब से वह ख़लीफ़ा हुआ है आज तक मुझे उसका कोई अतीया नहीं मिला। न कोई दीनार न दिरहम। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया तुझ पर अफ़सोस और उमर को तेरे हाल की ख़बर कैसे हो सकती है? इस लकड़ी का कार्य करने वाली को नहीं पता था कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं, जबकि तू ऐसी जगह बैठी हुई है, दूर दराज़ इलाक़े में जंगल के क़रीब बैठी हुई है तो उसने कहा सुब्हान-अल्लाह महिला कहने लगी सुब्हान-अल्लाह मैं गुमान नहीं करती कि कोई लोगों पर वाली बन जाए और उस को यह ख़बर न हो कि उसके आगे पूर्व और पश्चिम में किया है। तो उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रोते हुए उसकी तरफ़ मुतवज्जा हुए और यह कह रहे थे कि हाय उमर हाय कितने दावेदार होंगे। हर एक तुझसे अधिक दीन की समझ रखने वाला है हे उमर। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उससे फ़रमाया कि तू अपनी मज़लूमियत के हक़ को इसके हाथ कितने में बेचती है कि मैं इससे जहन्नुम से बचाना चाहता हूँ। अर्थात यह कहा कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को जहन्नुम से बचाना चाहता हूँ। तू बता कि अपनी मज़लूमियत के हक़ को कितने में बेचती हो। उस महिला ने कहा कि हमसे मज़ाक़ न कर। ख़ुदा तुझ पर रहमत करे। तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उससे फ़रमाया यह मज़ाक़ नहीं है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु उससे इसरार करते रहे यहां तक कि उसके

हक़ मज़लूमियत को पच्चीस दीनार में ख़रीद लिया। अभी यह बात हो रही थी कि हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु पहुंचे और उन दोनों ने कहा اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ। इस पर महिला ने अपना हाथ अपने सिर पर रखा और कहने लगी कि अल्लाह भला करे। मैंने अमीरुल मोमेनीन को उनके सामने बुरा-भला कह दिया। तो अमीरुल मोमेनीन ने उस से फ़रमाया तुझ पर कोई जुर्म नहीं। ख़ुदा तुझ पर रहम करे। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक चमड़े का टुकड़ा मांगा कि इस पर लिखें परन्तु नहीं मिला। फिर अपनी चादर में से जिसको ओढ़ा हुआ था एक टुकड़ा काटा और लिखा। بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ यह उसकी दस्तावेज़ है जो उमर ने अमुक महिला से आज के दिन तक उसका हक़-ए-मज़लूमियत पच्चीस दीनार में ख़रीदा है जब से वह वाली बना है। यदि वह अब अल्लाह के सामने क़ियामत के दिन में खड़ी हो कर दावा करे तो उमर उससे बुरी है। अली बिन अबी तालिब और अब्दुल्लाह बिन मसऊद इस पर गवाह हैं। फिर वह तहरीर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को दे दी और फ़रमाया कि यदि मैं तुमसे पहले दुनिया से गुज़र जाऊं तो इस को मेरे कफ़न में रख देना।

(उद्धरित ازالة الخفاء عن خلافة الخلفاء مترجم भाग 3 पृष्ठ 276 से 278 मनाक़िब फ़ारूक़ आज़म प्रकाशन क़दीमी पुस्तक ख़ाना कराची)

औलाद का रिश्ता देखने के लिए लोग क्या मयार रखते हैं। आजकल भी हम देखते हैं बड़े बड़े ऊंचे मयार होते हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का क्या मयार था? इस बारे में एक रिवायत है, हज़रत अस्लम रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के आज़ाद करदा थे कि कुछ रातों में से एक रात में मैं अमीरुल मोमेनीन के साथ मदीना की अतराफ़ में फिर रहा था। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक घड़ी के लिए अर्थात कुछ वक़्त के लिए विश्राम की उद्देश्य से एक दीवार की जानिब सहारा लिया। घर की दीवार थी उसके सहारे बैठ गए तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने सुना कि घर के अंदर एक वृद्धा अपनी बेटी से कह रही थी कि उठ और दूध में पानी मिला दे। लड़की ने कहा आप नहीं जानतीं कि अमीरुल मोमेनीन के मुनादी ने यह ऐलान कर दिया है कि दूध में पानी न मिलाया जाए। माँ ने कहा न उस वक़्त अमीरुल मोमेनीन मौजूद है और न उसका मुनादी। लड़की ने कहा कि ख़ुदा की क़सम यह बात तो हमारे लिए मुनासिब नहीं है कि सामने तो हम उनकी इताअत करें और अकेले में ना-फ़रमानी करने लगें। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु यह सुनकर बहुत ख़ुश हुए और अपने साथी से फ़रमाया कि हे असलम इस मकान पर निशान लगा दो। इसके दरवाज़े पर एक निशान लगा दो। दूसरे दिन आपने किसी को भेजा और उस लड़की का रिश्ता अपने बेटे आसिम से कर दिया। उसकी इसी सच्चाई पर, नेकी को देखते हुए अपने बेटे का रिश्ता उस लड़की से कर दिया। उससे आसिम की एक लड़की पैदा हुई हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ उसी लड़की की औलाद में से थे।

(उद्धरित ازالة الخفاء عن خلافة الخلفاء مترجم, भाग 3 पृष्ठ 281-282 मनाक़िब फ़ारूक़ आज़म, प्रकाशन क़दीमी पुस्तक ख़ाना कराची)

एक रिवायत में है कि सलमा वर्णन करते हैं कि एक दफ़ा में बाज़ार से गुज़र रहा था कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी अपने किसी काम से गुज़र रहे थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो के हाथ में कूड़ा था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा सलमा इस तरह रास्ते से हट कर चला करो। फिर मुझे हल्का सा कूड़ा मारा लेकिन कूड़ा मेरे कपड़े के किनारे पर लगा। अत: मैं रस्ते से हट गया और आप रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ामोश हो गए यहां तक कि इस बात को वर्ष गुज़र गया। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से मेरी बाज़ार में मुलाक़ात हुई। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया सलमा! क्या इस वर्ष हज को जाने का इरादा है। मैंने कहा हाँ हे अमीरुल मोमेनीन। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे घर ले गए और एक थैले में से छ: सौ दिरहम मुझे दिए और फ़रमाने लगे हे सलमा! इस को अपनी ज़रूरीयात में इस्तिमाल कर लो और यह उसका बदला है जो एक वर्ष पहले मैं ने तुम्हें कूड़ा मारा था। सलमा कहते हैं कि मैंने अर्ज़ किया कि अल्लाह की क़सम अमीरुल मोमिनीन मैं यह बात बिल्कुल भूल चुका था और आज आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने याद करवाई है।

(सीरत उमर बिन ख़त्ताब अज़ इब्ने अल् जोज़ीम पृष्ठ 98 प्रकाशन मिस्र अल् अज़हर)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु यह भी देखा करते थे कि बाज़ार की क़ीमतें ऐसी हों जिनसे किसी भी फ़रीक़ के शहरी हुक़ूक़ प्रभावित न हों। इसलिए इसी बात को वर्णन फ़रमाते हुए हज़रत मुस्लेह मौउद रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन किया कि "शहरी हुक़ूक़ में यह भी दाख़िल है कि लेन-देन के मुआमलात में ख़राबी न हो। हम देखते हैं कि इस्लाम ने इस हक़ को भी नज़रअंदाज नहीं किया। इसलिए इस्लाम ने भाव को बढ़ाने और महंगा सौदा करने से रोका है। इसी तरह दूसरों को नुक़्सान पहुंचाने और उनको तिजारत में फ़ेल करने के लिए भाव को गिरा देने से भी मना फ़रमाया है।" जिस तरह आजकल की मार्कीट में यह चलता है। "एक दफ़ा मदीना में एक व्यक्ति ऐसे रेट पर अंगूर बेच रहा था जिस रेट पर दूसरे दुकानदार नहीं बेच सकते। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पास से गुज़रे तो उन्होंने उस व्यक्ति को डाँटा क्योंकि इस तरह बाक़ी दुकानदारों को नुक़्सान पहुंचता था। उद्देश्य इस्लाम ने सौदा महंगा करने से भी रोक दिया और भाव को गिरा देने से भी रोक दिया ताकि न दुकानदारों को नुक़्सान हो और न पब्लिक को नुक़्सान हो।"

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 10 पृष्ठ 307)

आमिर वर्णन करते हैं कि एक व्यक्ति हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया और कहा कि मेरी एक बेटी थी जिसको जाहिलियत में ज़िंदा दरगोर कर दिया गया लेकिन मैंने उसे मरने से पहले निकाल लिया। जब वह इस्लाम ले आई तो इस पर अल्लाह ताआला की हदूद में से एक हद लग गई। ग़लत काम हुआ उसकी वजह से हद लग गई तो उसने एक छुरी ली ताकि इस से अपने आपको क़तल कर दे। मैंने उसे पकड़ लिया जबकि उसने अपनी कुछ रगों को काट लिया था। फिर मैंने उसका ईलाज किया यहां तक कि वह ठीक हो गई। फिर उसने उसके बाद तौबा कर ली और अच्छी तौबा की। हे अमीरुल मोमेनीन अब मुझे उसके लिए निकाह के संदेश आ रहे हैं। लड़की के रिश्ते आ रहे हैं। क्या मैं इसके पहले मामले के बारे में बताया करूँ कि क्या ज़िंदगी थी, उसकी पहली ज़िंदगी क्या थी, उसके साथ क्या कुछ होता रहा और क्या उसने अपने साथ किया? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस व्यक्ति से कहा कि अल्लाह ताआला ने इसके द्वेषों पर पर्दा डाला है और तू उसको ज़ाहिर करेगा।

अल्लाह की क़सम यदि तू ने इसके मामले के बारे में किसी को भी बताया तो मैं तुझे पूरे शहर-वालों के सामने इबरत का निशान बनाऊँगा बल्कि उसका निकाह एक पाकदामन मुस्लमान महिला की तरह कर दो। (तफ़सीर अलतिबरी, भाग 6 सूरत अलमायदा, पृष्ठ 127 दारुल अहया अल् तुर्रास अरबी प्रथम प्रकाशन 2001) भूल जाओ बातों को

ताऊन अमवास और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की लोगों की जानों के बारे में फ़िक्र क्या थी? इस बारे में आता है कि रमला से बैतुल-मुक़द्दस के रास्ते में छ: मील के फ़ासले पर एक वादी है जिसका नाम अमवास है। इतिहास की पुस्तक में लिखा है कि यहां से ताऊन के रोग का आरम्भ हुआ और अर्ज़-ए-शाम में फैल गया। इसलिए उसे ताऊन अमवास कहा जाता है। इस मर्ज़ से शाम में लातादाद अम्वात हुईं। कुछ के नज़दीक इससे पच्चीस हज़ार के क़रीब मौतें हुईं। सतरह हिज्री को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मदीना से शाम के लिए रवाना हुए और सरग़ स्थान पर पहुंच कर लश्कर के सिपहसालार से मुलाक़ात की। सरग़ भी शाम और हिजाज़ के सरहदी इलाक़े में तबूक की वादी की एक बस्ती का नाम है। और आप रज़ियल्लाहु अन्हो को इस बात की सूचना दी गई कि अमवास की ज़मीन में बीमारी फैली हुई है तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो मशवरे के बाद वाअत:लौट आए। इसकी तफ़सील सही बुख़ारी की एक रिवायत में इस प्रकार वर्णित है। यह पहले भी एक दफ़ा एक और हवाले से इस वाक़िया का कुछ वर्णन हो चुका है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु सरग़ स्थान पर पहुंचे तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो की मुलाक़ात फ़ौजों के अमीर हज़रत अबू उबयदा रज़ियल्लाहु अन्हो और उनके साथियों से हुई। इन लोगों ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को बताया कि शाम के मुल्क में ताऊन की वबा फूट पड़ी है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने पास मश्वरा के लिए अव्वलीन मुहाजिरीन को बुलाया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे मश्वरा किया परन्तु मुहाजिरीन में मतभेद राय हो गया। कुछ का कहना था कि यहां से पीछे नहीं हटना चाहिए जबकि कुछ ने कहा कि इस लश्कर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा करामऊ शामिल हैं और उनको इस वबा में डालना मुनासिब नहीं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुहाजिरीन को भिजवा दिया और अंसार को बुलाया, उनसे मश्वरा लिया गया परन्तु अंसार की राय में भी मुहाजिरीन की तरह मतभेद हो गया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अंसार को भिजवाया और फिर फ़रमाया क़ुरैश के बूढ़े लोगों को बुलाओ जो विजय मक्का के वक़्त इस्लाम क़बूल

कर के मदीना आए थे। उनको बुलाया गया उन्होंने एक ज़ुबान हो कर मश्वरा दिया कि उन लोगों को साथ लेकर वाअत:लौट चलें और वबाई इलाक़े में लोगों को न लेकर जाएं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने लोगों में वापसी का ऐलान कर दिया। हज़रत अबू उबयदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस अवसर पर सवाल किया क्या अल्लाह की तक़दीर से भागना सम्भव है? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू उबयदा रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया। हे अबू उबैदा! काश तुम्हारे अतिरिक्त किसी और ने यह बात कही होती। हाँ हम अल्लाह की तक़दीर से फ़रार होते हुए अल्लाह ही की तक़दीर की तरफ़ हैं।

यदि तुम्हारे पास ऊंट हों और तुम उनको लेकर ऐसी वादी में उतरो जिसके दो किनारे हों। एक सरसब्ज़ और दूसरा ख़ुशक तो क्या ऐसा नहीं कि यदि तुम अपने ऊंटों को सरसब्ज़ जगह पर चराओं तो वे अल्लाह की तक़दीर से है और यदि तुम उनको ख़ुशक जगह पर चराओं तो वह भी अल्लाह की तक़दीर से ही है। रावी कहते हैं कि इतने में हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो भी आ गए जो पहले अपनी किसी व्यस्तता की वजह से हाज़िर नहीं हो सके थे। उन्होंने अर्ज़ किया कि मेरे पास इस मसले का इलम है। मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जब तुम किसी जगह के बारे में सुनो कि वहां कोई बीमारी फूट पड़ी है तो वहां मत जाओ और यदि कोई मर्ज़ किसी ऐसी जगह पर फूट पड़े जहां तुम रहते हो तो वहां से भागते हुए बाहर मत निकलो। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अल्लाह का शुक्र अदा किया और वाअत:गए।

(सही अल् बुख़ारी, كتاب الطب، باب ما يُذكر فى الطاعون हदीस नंबर 5729)(अल् तब्कातुल कुबरा, भाग 3 पृष्ठ 214 -215 प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)(मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 4 पृष्ठ 177-178 भाग 3 पृष्ठ 239 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मदीना से आए थे और अभी वबा वाली जगह पर नहीं पहुंचे थे इसलिए अपने साथियों को लेकर वाअत:आ गए लेकिन हज़रत अबू उबयदा रज़ियल्लाहु अन्हो चूँकि फ़ौजियों के सिपहसालार थे और पहले से ही वबा वाले इलाक़े में मुक़ीम थे इसलिए आप रज़ियल्लाहु अन्हो और मुस्लमान फ़ौजें ताऊन प्रभावित इलाक़े में ही रहें। जो जहां थे वह वहीं रहे। मदीना पहुंच कर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने शाम के मुस्लमानों के मुताल्लिक़ सोचना शुरू किया कि उन्हें ताऊन की तबाह कारियों से कैसे बचाया जाए।

विशेषता हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को हज़रत अबू उबयदा रज़ियल्लाहु अन्हो का बहुत ख़्याल था। एक दिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू उबयदा रज़ियल्लाहु अन्हो को पत्र भेजा कि मुझे तुम से एक ज़रूरी काम है इसलिए जब तुम्हें यह ख़त पहुंचे तो तुरंत मदीना के लिए रवाना हो जाना। यदि ख़त रात को पहुंचे तो सुबह होने का इंतिज़ार न करना और यदि पत्र सुबह पहुंचे तो रात होने का इंतिज़ार न करना। यह मुहब्बत थी आपकी हज़रत अबू उबयदा रज़ियल्लाहु अन्हो से। हज़रत अबू उबयदा रज़ियल्लाहु अन्हों ने जब वह ख़त पढ़ा तो कहने लगे में अमीरुल मोमेनीन की ज़रूरत को जानता हूँ। अल्लाह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पर रहम करे वह उसे बाक़ी रखना चाहते हैं जो बाक़ी रहने वाला नहीं है। अर्थात यह तो अल्लाह जानता है कि मेरे साथ क्या होना है, अबू उबयदा रज़ियल्लाहु अन्हों ने यह सोचा। फिर उस ख़त का उत्तर दिया कि हे अमीरुल मोमेनीन मैं आप रज़ियल्लाहु अन्हो की मंशा को समझ गया हूँ मुझे न बुलाइए। यहीं रहने दीजीए। मैं मुस्लमान सिपाहीयों में से एक हूँ। जो मुक़द्दर है वह हो कर रहेगा। मैं उनसे कैसे मुँह मोड़ सकता हूँ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब वह ख़त पढ़ा तो रो पड़े। उपस्थित लोगों ने पूछा कि हे अमीरुल मोमेनीन क्या हज़रत अबू उबयदा रज़ियल्लाहु अन्हो फ़ौत हो गए। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया नहीं लेकिन शायद हो जाएं।

(سير اعلام النبلاء، भाग 1 पृष्ठ 18-19 अबू उबैदा बिन अल्जराह, रिसाला इल्मिया दमिशक़ 2014 ई.)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने राए देने वाले सहबा के मश्वरे के बाद हज़रत अबू उबयदा रज़ियल्लाहु अन्हो को लिखा कि तुम लोगों को नीचली ज़मीन में लेकर उतरे हो इसलिए किसी बुलंद और हवा वाले स्थान पर चले जाओ। नीचली जगह की बजाय ज़रा ऊंची जगह, पहाड़ी जगह पर चले जाओ जहां ज़रा हुआ भी साफ़ हो। हज़रत अबू उबयदा रज़ियल्लाहु अन्हो अभी इस हुक्म की तामील के मुताल्लिक़ फ़िक्र कर रहे थे कि ताऊन ने उन पर वार किया और वह फ़ौत हो गए। हज़रत अबू उबयदा रज़ियल्लाहु अन्हों अपने जांनशीन हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हो का नामकरण किया था लेकिन वह भी ताऊन में ग्रस्त हो गए और उनका इंतिक़ाल हो गया। हज़रत माज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपना क़ायमक़ाम हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को बनाया था। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक तक़रीर की फ़रमाया : यह वबा जब फूटती है तो आग की तरह फैलती है। पहाड़ों में छिप कर अपनी जानें बचाओ। आप लोगों को लेकर वहां से निकले और पहाड़ों में चले गए यहां तक कि वबा का ज़ोर टूट गया और घटते घटते बिल्कुल ख़त्म हो गया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु की इस तक़रीर का इलम हुआ तो न केवल यह कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे पसंद फ़रमाया बल्कि उसे अपने इस हुक्म की तामील क़रार दिया जो आपने हज़रत अबू उबयदा रज़ियल्लाहु अन्हो को था।

(उद्धरित सय्यदना हज़रत उमर फ़ारूक़ आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक, पृष्ठ 413 इस्लामी पुस्तक ख़ाना लाहौर)

हज़रत अबू उबैदा बिन जराह रज़ियल्लाहु अन्हो के अतिरिक्त हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत यज़ीद बिन अबूसुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत हारिस बिन हशाम रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत सुहेल बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अतबा बिन सहील रज़ियल्लाहु अन्हो और उनके अतिरिक्त भी अन्य सम्मानित इस वबासे फ़ौत हुए थे। (तारीख़ अल्तिबरी, भाग 2, पृष्ठ 487 सन् 17 हिज्री, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

ताऊन अमवास से वाअत:आने का वर्णन एक जगह पर हज़रत मुस्लेह मौउद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी वर्णन फ़रमाया है। आप वर्णन फ़रमाते हैं कि "जब शाम में जंग हुई और वहां ताऊन पड़ी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वहां ख़ुद तशरीफ़ ले गए ताकि लोगों के मश्वरा से फ़ौज की हिफ़ाज़त का कोई उचित इंतिज़ाम किया जा सके परन्तु जब बीमारी का हमला तेज़ हो गया तो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो का यहां ठहरना मुनासिब नहीं, आप रज़ियल्लाहु अन्हो वाअत:मदीना तशरीफ़ ले जाएं। जब आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने वापसी का इरादा किया तो हज़रत अबू उबयदा रज़ियल्लाहु अन्हों ने कहा أَفِرَارًا مِنْ قَدَرِ اللهِ؟ क्या अल्लाह ताआला की तक़दीर से आप रज़ियल्लाहु अन्हो भागते हैं? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने तुरंत उत्तर दिया। نَعَمْ نَفِرُّ مِنْ قَدَرِ اللهِ إِلَى قَدَرِ اللهِ۔ हाँ हम ख़ुदा ताआला की एक तक़दीर से उसकी दूसरी तक़दीर की तरफ़ भागते हैं। उद्देश्य दुनियावी सामानों को तर्क करना जायज़ नहीं। हाँ दुनियावी सामानों को दीन के अधीन रखना चाहिए।''

(अल्लाह ताआला से सच्चा और हक़ीक़ी ताल्लुक़ क़ायम करने में ही हमारी सफ़लता है, अनवारुल उलूम, भाग 21पृष्ठ 104)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ुबूलियत दुआ के कुछ वाक़ियात हैं। हज़रत ख़ौ्वात बिन ज़ूबेर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़िलाफ़त के समय में लोग सख़्त सूखे में ग्रस्त हुए तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों के साथ निकले और उनको दो रकात नमाज़ इस्तिस्क़ा पढ़ाई। फिर अपनी चादर अपने दोनों कंधों पर डाली और चादर के दाएं तरफ़ को बाएं कंधे पर डाला और बाएं तरफ़ वाली चादर को दाएं कंधे पर डाला अर्थात लपेट ली। फिर अपने हाथ को दुआ के लिए उठाया और अर्ज़ किया اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَغْفِرُكَ وَ نَسْتَسْقِيْكَ! बेशक हम तुझ से बख़शिश तलब करते हैं और बारिश की आशा करते हैं। अभी आप दुआ मांग कर अपनी जगह से पीछे नहीं हुए थे कि बारिश शुरू हो गई। रावी कहते हैं कि हमारे जो देहाती लोग थे वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आए और अर्ज़ किया : हे अमीरुल मोमेनीन अमुक दिन अमुक वक़्त हम अपने सहराई गावं में थे कि बादलों ने हम पर साया किया और हमने इस में से एक आवाज़ सुनी कि हे अबू हफ़्स! बारिश के द्वारा मदद तुम्हारे पास आई। हे अबू हफ़्स बारिश के ज़रीया मदद तुम्हारे पास आई।

(कन्जुल अम्माल, मुजल्द 4 भाग 8 हदीस 23533 الصلوٰة الباب السابع باب صلاة الاستسقاء، दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2004 ई.)

आप रज़ियल्लाहु अन्हो की एक दुआ की क़बूलीयत का वाक़िया दरिया-ए-नील के जारी होने के बारे में वर्णन किया जाता है। दरिया-ए-नील जब ख़ुशक होता था तो इस्लाम से पहले वहां के लोगों में उसे जारी रखने की एक रस्म थी और अल्लाह बेहतर जानता है कि वाक़ई इस रस्म का कोई असर होता था या नहीं लेकिन इस्लाम ने आकर इस रस्म का अंत कर दिया और इस रस्म के अंत के बारे में जो वाक़िया वर्णन किया जाता है वह यूं है कि केस बिन हज्जाज से रिवायत है कि जब मिस्र विजय हुआ तो वहां के बाशिंदे अजमी महीनों के किसी दिन हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आए तो लोगों ने कहा हे अमीर! हमारे दरिया-ए-नील के

लिए एक रस्म है जिसके बग़ैर यह बहता नहीं है। हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा कि वह किया है? उन्होंने कहा कि जब ग्यारह रातें इस महीने की गुज़र जाएं तो हम एक कुँवारी लड़की के पास उसके माता पिता की मौजूदगी में जाते हैं। फिर उसके माता पिता को रज़ामंद करते हैं और इस को बेहतरीन कपड़े और ज़ेवरात पहनाते हैं। फिर उसको दरिया-ए-नील में डाल देते हैं। अर्थात शुरू में डाल देते थे। हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे कहा कि इस्लाम में ऐसा कभी नहीं होगा। नि:संदेह इस्लाम इन समस्त रस्मों को ख़त्म करता है जो इस से पहले थीं।

अत: वह ठहरे रहे और आख़िर जब ऐसा वक़्त आ गया कि दरिया-ए-नील भी ख़ुशक हो गया। दरिया-ए-नील उस वक़्त बिल्कुल नहीं बह रहा था यहां तक कि लोगों ने वतन से निकलने का इरादा कर लिया। लोगों ने वहां से जाने का, जगह को छोड़ने का इरादा कर लिया। अत: जब हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह देखा तो हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो को इसके बारे में लिखा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को उत्तर लिखा कि तुमने जो कुछ कहा वह ठीक है। नि:संदेह इस्लाम इन समस्त रस्मों को ख़त्म करता है जो इस से पहले थीं। उन्होंने ख़त के अंदर एक छोटा रुक्का भेजा और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु को लिखा कि नि:संदेह मैंने तुम्हारी तरफ़ अपने ख़त के अंदर एक रुक्का भेजा है इसको दरिया-ए-नील में डाल देना। जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़त हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को पहुंचा तो उन्होंने वह रुक्का निकाला और उस को खोला तो इस में लिखा था।अल्लाह के बंदे उमर बिन ख़त्ताब अमीरुल मोमेनीन की तरफ़ से मिस्र के दरिया-ए-नील की तरफ़। अम्मा बाद, यदि तू ख़ुद से बह रहा है तो न बह, लेकिन यदि अल्लाह ताआला तुझे चला रहा है तो मैं एक सर्वशक्तिमान ख़ुदा से दुआ करता हूँ कि वह तुझे चलाए। अत: हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने वह रुक्का सलीब के त्योहार से एक दिन पहले दरिया-ए-नील में डाल दिया। जब सुबह हुई तो अल्लाह ताआला ने एक ही रात में सोला हाथ अधिक पानी दरिया-ए-नील में जारी कर दिया। फिर अल्लाह ताआला ने मिस्र वलों की इस रस्म का अंत कर दिया। (तारीख़ खुलफ़ा अज़ जलालुद्दीन सियूती, उमर बिन खत्ताब पृष्ठ 100 प्रकाशन दारुल किताब अल् अरबिया बेरूत लुबनान 1999 ई.)

अक्सर तारीख़ी पुस्तकें में तो इस वाक़िया की तसदीक़ ही लिखी है लेकिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के एक सीरत निगार मुहम्मद हुसैन हैकल ने इसका खंडन किया है कि ऐसी कोई रस्म नहीं थी। (उद्धरित सय्यदना हज़रत उमर फ़ारूक़ आज़म अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल,अनुवादक, पृष्ठ 673 इस्लामी पुस्तक ख़ाना लाहौर) बहरहाल यह एक वाक़िया है।

फिर हज़रत सारीह रज़ियल्लाहु अन्हु की जंग में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की आवाज़ सुनने का वाक़िया है, पहले भी वर्णन हो चुका है। यहां भी इस हवाले से वर्णन कर देता हूँ क़ुबूलियत-ए-दुआ के हवाले से और जो अल्लाह ताआला का एक ख़ास व्यवहार था। तारीख़ तिबिर में है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत सारिया बिन ज़ुनीम को फिसा और दार अजरद के इलाक़े की तरफ़ रवाना किया। उन्होंने वहां पहुंच कर लोगों का घेराव कर लिया तो इस पर उन्होंने अपने हिमायती लोगों को अपनी मदद के लिए बुलाया। वह लोग मुस्लमान लश्कर के मुक़ाबला के लिए सहरा में इकट्ठे हो गए और जब उनकी संख्यां अधिक हो गई तो उन्होंने हर तरफ़ से मुस्लमानों को घेर लिया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जुमा के दिन ख़ुतबा दे रहे थे कि आपने फ़रमाया '' يَاسَارِيَةُ ابنُ زُنَيم، اَلْجَبَلَ اَلْجَبَلَ'' अर्थात हे सारिया बिन ज़ुनीम पहाड़ पहाड़। मुस्लमान लश्कर जिस जगह मुक़ीम था उसके क़रीब ही एक पहाड़ था। यदि वह उसकी पनाह लेते तो दुश्मन केवल एक तरफ़ से हमलावर हो सकता था। अत: उन्होंने पहाड़ की जानिब पनाह ले ली। इसके बाद उन्होंने जंग की और दुश्मन को शिकस्त दी और बहुत सा माल-ए-ग़नीमत हासिल किया।

(तारीख़ तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 553-554 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी इस वाक़िया को वर्णन फ़र्मा कर फ़रमाया है कि सहाबा से ऐसे ख़वारिक़ कसरत से साबित हैं।

(उद्धरित बराहीन अहमदिया भाग चहारुम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 1 पृष्ठ 654 हाशिया दर हाशिया नंबर 4)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का जो मुकम्मल इक़तिबास है वह मैं पिछले ख़ुतबा में पढ़ चुका हूँ। अत: दरिया-ए-नील के जारी करने वाले वाक़िया को भी हम देखें तो बईद नहीं कि वह भी सही वाक़िया ही हो जिसको कुछ तारीख़ दान सही नहीं मानते

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की टोपी की बरकत और क़ैसर रुम के बारे में एक वर्णन मिलता है। इसको हज़रत मुस्लेह मौउद रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन फ़रमाया है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में एक दफ़ा क़ैसर के सिर में शदीद दर्द हुआ और बावजूद हर किस्म के ईलाज के उसे आराम न आया। किसी ने उसे कहा कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को अपने हालात लिख कर भिजवा दो और उनसे तबर्रुक के तौर पर कोई चीज़ मँगवाओ। वह तुम्हारे लिए दुआ भी करेंगे और तबर्रुक भी भिजवा देंगे। उनकी दुआ से तुम्हें ज़रूर शिफ़ा हासिल हो जाएगी। उसने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास अपना दूत भेजा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने समझा कि यह मुतकब्बिर लोग हैं। मेरे पास उसने कहाँ आना है। अब यह दुख में मुबतला हुआ है तो उसने अपना दूत मेरे पास भेज दिया है। यदि मैंने उसे कोई और तबर्रुक भेजा तो सम्भव है वह उसे हक़ीर समझ कर इस्तिमाल न करे। इसलिए मुझे कोई ऐसी चीज़ भिजवानी चाहिए जो तबर्रुक का काम भी दे और उसके घमंड को भी तोड़ दे। इसलिए उन्होंने अपनी एक पुरानी टोपी जिस पर जगह जगह दाग़ लगे हुए थे और जो मेल की वजह से काली हो चुकी थी उसे तबर्रुक के तौर पर भिजवा दी। उसने जब यह टोपी देखी तो उसे बहुत बुरा लगा तो उसने टोपी नहीं पहनी परन्तु ख़ुदा ताआला यह बताना चाहता था कि तुम्हें बरकत अब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से ही हासिल हो सकती है। उसे इतना शदीद दर्द-ए-सर हुआ कि उसने अपने नौकरों से कहा वह टोपी लाओ जो उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने भिजवाई थी ताकि मैं उसे अपने सिर पर रखूं। इसलिए उसने टोपी पहनी और इस का दर्द जाता रहा। चूँकि उसे हर आठवें दसवें दिन सिर दर्द हो जाया करता था इसलिए फिर तो उसका यह मामूल हो गया कि वह दरबार में बैठता तो वही हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की मैली कुचैली टोपी उसने अपने सिर पर रखी हुई होती। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि यह निशान जो ख़ुदा ताआला ने उसे दिखाया इस में एक और बात भी गुप्त थी। (और वह कि) रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक सहाबी क़ैसर के पास क़ैद थे और उसने हुक्म दिया था कि उन्हें सूअर का गोश्त खिलाया जाए। वह भूख बर्दाश्त करते परन्तु सूअर के क़रीब नहीं जाते थे। जबकि इस्लाम ने यह कहा है कि बेचैनी की हालत में सूअर का गोश्त खा लेना जायज़ है परन्तु वह कहते थे कि मैं सहाबी हूँ मैं ऐसा नहीं कर सकता। जब कई कई दिन के भूखे रहने के बाद वह मरने लगते तो क़ैसर उन्हें रोटी दे देता। जब फिर उन्हें कुछ ताक़त आ जाती तो वह फिर कहता कि उन्हें सूअर खिलाया जाए। इस तरह न वह उन्हें मरने देता न जीने। किसी ने उसे कहा कि तुझे यह सिर का दर्द इसलिए है कि तू ने इस मुस्लमान को क़ैद रखा हुआ है और अब इसका ईलाज यही है कि तुम उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से अपने लिए दुआ कराओ और उनसे कोई तबर्रुक मँगवाओ। जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे टोपी भेजी और उसके दर्द में कमी हो गया तो वह इस से इतना प्रभावित हुआ कि उसने उस सहाबी को भी छोड़ दिया। अब देखो! कहाँ क़ैसर एक सहाबी को तकलीफ़ देता है और अल्लाह

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

ताआला उसकी सज़ा के तौर पर उसके सिर में दर्द पैदा कर देता है। कोई और व्यक्ति उसे मश्वरा देता है कि उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से तबर्रुक मँगवाओ और उनसे दुआ करवाओ। वह तबर्रुक भेजते हैं और क़ैसर का दर्द जाता रहता है। तो इस तरह अल्लाह ताआला उस सहाबी की निजात के भी सामान कर देता है और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सदाक़त उस पर ज़ाहिर कर देता है।

(उद्धरित सैर-ए-रुहानी 4) अनवारुल उलूम, भाग 19 पृष्ठ 536-537)

तफ़सीर राज़ी में है कि क़ैसर ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को लिखा कि मुझे सिर दर्द है जो ठीक नहीं हो रही। आप मेरे लिए कोई दवा भिजवाएं तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसके लिए टोपी भिजवाई। जब वह उसे अपने सिर पर रखता तो उसके सिर में दर्द रुक जाती और जूंही वह उसे सिर से उतारता उसे दुबारा सिर दर्द हो जाती। अत: इस बात से वह आश्चर्यचकित हुआ उसने टोपी में तलाश किया और उस में एक काग़ज़ पाया जिसमें बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम लिखा हुआ था। यह तफ़सीर राज़ी का एक वर्णन है

(तफ़सीर-ए-कबीर इमाम राज़ी, भाग 1, पृष्ठ 143 प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की दुआएं हैं कुछ। अम्र बिन मय्मून वर्णन करते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु एह दुआ किया करते थे कि اَللّٰهُمَّ تَوَفَّنِیْ مَعَ الْأَبْرَارِ وَلَا تُخَلِّفْنِیْ فِی الْأَشْرَارِ وَقِنِیْ عَذَابَ النَّارِ وَأَلْحِقْنِیْ بِالْأَخْیَارِ۔ हे अल्लाह मुझे नेक लोगों के साथ वफ़ात दे और मुझे बुरे लोगों में पीछे न छोड़ और मुझे आग के अज़ाब से बचा और मुझे नेक लोगों के साथ मिला दे। (अल् तब्कातुल कुबरा ले इब्ने साअद, भाग 3, पृष्ठ 177 वर्णन हिज्र अमर बिन अल् ख़त्ताब, प्रकाशन दारुल अहया अल् तुर्रास अरबी 1996 ई.)

यहया बिन सईद बिन मुस्सययब से रिवायत है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो जब मिना से लौटे तो अपने ऊंट को अबता में बिठाया और बतहा की वादी के पत्थरों से एक ढेर बनाया और इस पर अपनी चादर का एक किनारा बिछा कर लेट गए और अपने हाथ आसमान की तरफ़ उठा कर दुआ करने लगे। اَللّٰهُمَّ كَبُرَتْ سِنِّیْ وَضَعُفَتْ قُوَّتِیْ وَانْتَشَرَتْ رَعِیَّتِیْ فَاقْبِضْنِیْ إِلَیْكَ غَیْرَ مُضَیِّعٍ وَلَا مُفَرِّطٍ हे अल्लाह मेरी उमर अधिक हो गई है और मेरी शक्ति कम हो गई है और मेरी प्रजा फैल गई है। तू मुझे बग़ैर ज़ाए किए और कम किए वफ़ात दे दे। अत: अभी ज़ुल हज्जा का महीना ख़त्म नहीं हुआ था कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो पर हमला हुआ और आपकी शहादत हो गई। (اسد الغابہ भाग 4 पृष्ठ 162 उमर बिन अल् ख़त्ताब दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि सूखे के दिनों में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक नया काम किया जिसे वह नहीं किया करते थे। वह यह था कि लोगों को इशा की नमाज़ पढ़ा कर अपने घर में दाख़िल हो जाते और रात के अंतिम भाग तक नियमत नमाज़ पढ़ते रहते। फिर आप बाहर निकलते और मदीना के अतराफ़ में चक्कर लगाते रहते। एक रात सहरी के वक़्त मैंने उनको यह कहते हुए सुना कि اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْ هَلَاكَ أُمَّةِ مُحَمَّدٍ عَلٰی یَدَیَّ۔ हे अल्लाह! मेरे हाथों मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत को हलाकत में न डालना।

(अल् तब्कातुल कुबरा ले इब्ने साअद, भाग 3 पृष्ठ 237 प्रकाशनम दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि "इन्सान को चाहिए कि अपने ख़ुदा ताआला के लिए इबादत करे फिर चाहे लोग उसको बुरा समझे या भला इस बात की परवाह नहीं चाहिए और अपने ज़ाहिर को जान-बूझ कर बुरा बनाना आँहज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सिखाई हुई इस दुआ से नाजायज़ साबित होता है। वह दुआ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को सिखलाई थी और इस तरह है اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ سَرِیْرَتِیْ خَیْرًا مِّنْ عَلَانِیَتِیْ وَاجْعَلْ عَلَانِیَتِیْ صَالِحَةً۔ हे अल्लाह! मेरे आन्तरिक को मेरे ज़ाहिर से बेहतर बना और मेरे ज़ाहिर को अच्छा कर।"

(हक़ायकुल फुर्कान भाग चार पृष्ठ 482)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का मस्जिद नब्वी और नमाज़ के आदाब का ख़्याल रखना, इस बारे में यह रिवायत है। हज़रत सायब बिन यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है। वह कहते थे कि मैं मस्जिद में खड़ा था कि एक व्यक्ति ने मुझे कंकर मारी। मैंने उसकी तरफ़ नज़र उठा कर देखा तो क्या देखता हूँ कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो हैं। उन्होंने कहा जाओ इन दोनों को मेरे पास ले आओ। दो व्यक्ति थे जो ऊंची ऊंची बातें कर रहे थे। मैं इन दोनों को ले आया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा तुम दोनों कौन हो या कहा तुम कहाँ से हो? उन्होंने कहा कि हम तायफ के बाशिंदों में से हैं। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि यदि तुम इस शहर के बाशिंदे होते तो मैं तुम्हें सज़ा देता। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मस्जिद में तुम अपनी आवाज़ें बुलंद करते हो।

(सही अल् बुख़ारी, किताब अस्सलात, बाब रफ़ा अल् सूत् फ़िल मस्जिद, हदीस 470)

हज़रत इब्ने उमररज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का तरीक़ा यह था कि जब तक सफ़ें बराबर नहीं होती थीं उस वक़्त तक अल्लाहु-अकबर नहीं कहते थे बल्कि पृष्ठ सीधी करवाने के लिए एक व्यक्ति निर्धारित फ़रमाया हुआ था। अबू उसमान नह्दी ने कहा कि मैंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा कि जब नमाज़ के लिए इक़ामत होती तो क़िबला की तरफ़ पीठ करके अर्थात लोगों की तरफ़ मुँह करके फ़रमाते हे अमुक आगे हो जाओ और अमुक! पीछे हो जाओ। अर्थात सफ़ें सीधी कर रहे होते थे। तुम अपनी सफ़ों को सीधी रखों। जब सफ़ें सीधी हो जातीं तो फिर आप क़िबला की तरफ़ मुँह करके अल्लाहु-अकबर कहते।

(सीरत उमर बिन अल् ख़त्ताब अज़ इब्ने जोज़ी, पृष्ठ 165 प्रकाशन मिसृया अज़हर)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की माली क़ुर्बानी और अल्लाह ताआला के मार्ग में ख़र्च करने के बारे में एक रिवायत है। और भी बहुत सारी रिवायतें हैं। हज़रत इब्ने उमर वर्णन करते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ैबर में कुछ ज़मीन हासिल की और वह नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास उसके सम्बन्ध में मश्वरा करने आए। उन्होंने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मैंने ख़ैबर में ज़मीन हासिल की है। मेरे नज़दीक इससे बेहतर मुझे कभी कोई जायदाद नहीं मिली। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मझे उसके बारे में क्या मश्वरा देते हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यदि तुम चाहो तो असल ज़मीन वक़्फ़ कर दो और उसकी आमदनी ग़रीबों पर ख़र्च करो। नाफ़े कहते थे कि फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने वह सदक़ा में दे दी इस शर्त पर कि न वह बेची जाए और न किसी को भेंट की जाए, न वारिसों में तक़सीम की जाए और उन्होंने वह ज़मीन मुहताजों और रिश्तेदारों, ग़ुलामों के आज़ाद करने, अल्लाह के मार्ग में और मुसाफ़िरों और मेहमानों के लिए वक़्फ़ कर दी और जो ज़मीन का निगरान हो उसके लिए कोई हर्ज नहीं कि वह इस में से दस्तूर के अनुसार स्वयं खाए और खिलाए परन्तु माल को जमा करने वाला ना हो।

(सही अल् बुख़ारी किताब श्रूत, बाब श्रूत फ़ील वक्फ़, हदीस 2737)

जब भी अवसर आया हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़ुर्बानी करने में बढ़ने की कोशिश की। वह भी अवसर था जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने माल की क़ुर्बानी की तहरीक फ़रमाई तो अपना आधा माल लेकर आ गए। पहले भी यह वाक़िया वर्णन हो चुका है। लेकिन ख़शीयत इलाही का यह हाल था कि जब फ़ौत होने लगे तो आँखों से आँसू रवां थे और फ़रमाते थे कि मैं किसी इनाम का अधिकारी नहीं हूँ। मैं तो केवल यह जानता हूँ कि सज़ा से बच जाऊं।

(उद्धरित खुत्बाते महमूद भाग 10 पृष्ठ 24)

यह था आपका ख़शीयत, ख़ौफ़-ए-ख़ुदा का हाल। बहरहाल अभी थोड़ी सी बातें हैं जो आइन्दा भी इन शा अल्लाह वर्णन हो जाएँगी।

☆ ☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 103 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाहु-अकबर इन दोनों (अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्होन और उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के सिदक़ और ख़ुलूस की क्या बुलंद शान है वे दोनों ऐसे (मुबारक क़ब्रिस्तान में दफ़न हुए कि यदि मूसा अलैहिस्सलाम और ईसा अलैहिस्सलाम वहां दफ़न होना अपने लिए सम्मान समझते हुए इच्छा करते (हज़रत मसीह मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद फ़ारुके आज़म हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताओं और गुणों का वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 26 नवम्बर 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दरबार में ज्ञान रखने वाले विशेषता क़ुरआन-ए-क्रीम का ज्ञान रखने वालों का बड़ा स्थान था चाहे वे छोटी उमर के नौजवान हैं या बच्चे हैं या बड़े हैं। बुख़ारी में एक रिवायत है हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु कहा उयैना बिन हसन बन हुज़ैफ़ा मदीना आए और अपने भतीजे हुर बिन केस के पास उतरे और हुर बिन क़ैस उन लोगों में से थे जिनको हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अपने क़रीब बिठाया करते थे और क़ारी अर्थात क़ुरआन के ज्ञानी ही, बड़ी आयु के हों या जवान, मज्लिस में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के क़रीब बैठने वाले थे, उनको मश्वरा देने वाले होते थे। उयैना ने अपने भतीजे से कहा: हे भतीजे इस अमीर के पास तुम्हारा सम्मान है। इसलिए मेरे लिए उनके पास आने की इजाज़त माँगो। हुर बिन क़ैस ने कहा मैं तुम्हारे लिए उनके पास आने की इजाज़त ले लूँगा। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो कहते थे इसलिए हुर ने उयैना के लिए इजाज़त मांगी और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनको इजाज़त दी। जब उयैना उनके पास आया तो उसने कहा ख़त्ताब के बेटे यह क्या बात है। अल्लाह की क़सम! न तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो हम को बहुत माल देते हैं और न हमारे मध्य और हमारे माल के मध्य इन्साफ़ से फ़ैसला करते हैं। यह सुनकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु नाराज़ हो गए यहां तक कि उस को कुछ कहने को ही थे कि हुर ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से अर्ज़ किया अमीरुल मोमेनीन अल्लाह ताआला ने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से फ़रमाया है। خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِيْنَ (अल् ऐराफ़ : 200) अर्थात हे नबी हमेशा क्षमा किया करो और अच्छी बातों का हुक्म दे और जाहिलों से दूरी इख़तियार करो और यह उयैना जाहिलों में से ही है। अल्लाह की क़सम जब हुरमुज़ान ने उनके सामने यह आयत पढ़ी तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वहीं रुक गए और कुछ नहीं कहा और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अल्लाह की किताब को सुनकर रुक जाते थे। (सही अल् बुख़ारी, किताब अल् तफ़सीर सूरत अल् ऐराफ़, باب خذالعفو...حديث हदीस 4642)

हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दरबार का एक वाक़िया इस प्रकार वर्णन फ़रमाते हैं कि "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दरबार में एक अमीर आया। उसने इस बात को बहुत मकरूह समझा कि एक दस बरस का लड़का भी बैठा है कि ऐसी आलीशान बारगाह में लौंडों को क्या काम? संयोग से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु उस अमीर की किसी हरकत पर नाराज़ हुए। जल्लाद को बुलाया। वही लड़का पुकार उठा। وَالْكَاظِمِيْنَ الْغَيْظَ(आले इमरान :135) और وَ اَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِيْنَ (अल् ऐराफ़ : 200) और कहा هٰذَا مِنَ الْجَاهِلِيْنَ۔। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का चेहरा लाल हो गया और ख़ामोश रह गए। उस वक़्त उसके भाई ने" अर्थात उस व्यक्ति के भाई ने जो बोल रहा था "कहा। देखा उसी लौंडे ने तुम्हें बचाया है जिसको तुम हक़ीर समझते थे।"

(हक़ायकुल फ़ुरकान, भाग 2, पृष्ठ 122)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बच्चों की तर्बीयत किस तरह किया करते थे। इस बारे में एक रिवायत है। यूसुफ़ बिन याक़ूब ने कहा इब्ने शहाब ने मुझे और मेरे भाई को और मेरे चचा के बेटे को जबकि हम कमसिन बच्चे थे कहा तुम अपने आपको बच्चा होने की वजह से हक़ीर न समझना क्योंकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को जब कोई विषय दरपेश आता तो आप बच्चों को बुलाते और उनसे भी इस उद्देश्य से मश्वरा लेते कि आप उनकी अक़्लों को तेज़ करना चाहते थे।

(सीरत उमर बिन अल् ख़त्ताब अज़ इब्ने जोज़ी, पृष्ठ 165 प्रकाशन मिसरी अल् अज़हर)

जंग-ए-अहद में जब जंग का पाँसा पल्टा और मुस्लमानों को शदीद नुक़्सान बर्दाश्त करना पड़ा तो उस वक़्त अबू सुफ़ियान ने तीन बार पुकार कर कहा। यहां हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ग़ैरत का सवाल है कि क्या उन लोगों में मुहम्मद है? नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा को उसे उत्तर देने से रोक दिया। फिर उसने तीन बार पुकार कर पूछा क्या लोगों में अबू क़हाफ़ा का बेटा है? फिर तीन बार पूछा क्या उन लोगों में इब्ने ख़त्ताब है? फिर वह अपने साथियों की तरफ़ लौट गया और कहने लगा ये जो थे वे तो मारे गए। यह सुनकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अपने आपको क़ाबू में नहीं रख सके और बोले हे अल्लाह के दुश्मन बख़ुदा तुमने झूठ कहा है। जिनका तुमने नाम लिया है वह सब ज़िंदा हैं और जो बात नागवार है उसमें से अभी तेरे लिए बहुत कुछ बाक़ी है। अबू सुफ़ियान बोला यह मार्का बदर के मार्का का बदला है और लड़ाई तो डोल की तरह है कभी इसकी विजय और कभी उसकी। (सही अल् बुख़ारी किताब जिहाद बाब يكره من التنازع والاختلاف فى الحرب.....हदीस नंबर 3039)

फिर बैतुल माल के अम्वाल की हिफ़ाज़त और निगरानी में किस हद तक सचेत थे। इस बारे में रिवायत है। ज़ैद बिन असलम कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो ने दूध पिया। आपको वह पसंद आया। किसी ने गिलास में दूध दिया, आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने पिया और पसंद आया। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उस व्यक्ति से पूछा जिसने आप रज़ियल्लाहु अन्हो को दूध पिलाया था कि यह दूध कहाँ से आया है? उसने आप रज़ियल्लाहु अन्हो को बताया कि वह एक चश्मा पर गया जिसका उसने नाम भी लिया। वहां ज़कात के ऊंटों को लोग पानी पिला रहे थे। उन्होंने मेरे लिए उनका दूध दोहा जिसको मैंने अपने इस पानी पीने वाले बर्तन में डाल लिया। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो अपना हाथ मुँह में डाल करके उसको निकाल दिया। (मौता इमाम मालिक किताब جاء فى أخذ الصدقات والتشديد فيها हदीस 31 दारुल अहया अल तुर्रास अल् अरबी बेरूत 1985 ई.) कि यह ज़कात का माल है। यह मैं नहीं पियूँगा।

बरा बिन मारूर बेटे वर्णन करते हैं कि एक दिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु घर से निकले यहां तक कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो मंच पर तशरीफ़ लाए। आप रज़ियल्लाहु अन्हो उस वक़्त बीमार थे। आपकी इस बीमारी के लिए शहद तजवीज़ किया गया। बैतुल माल में शहद का बर्तन मौजूद था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा यदि आप लोग मुझे इजाज़त दें तो मैं उसे ले लेता हूँ अन्यथा यह मुझ पर हराम है तो लोगों ने इस बारे में आपको इजाज़त दे दी।(अल् तब्कातुल कुबरा ले इब्ने साअद भाग 3 पृष्ठ 147 ذكر استخلاف عمر مطبوعه دارا لاحياء التراث العربى بيروت-1996)

बैतुल माल के अम्वाल की हिफ़ाज़त का किस क़दर ख़्याल था इस बारे में यह वाक़िया पहले भी वर्णन कर चुका हूँ। संक्षेप में वर्णन करता हूँ कि एक दोपहर को शदीद गर्मी में पीछे रह जाने वाले दो ऊंटों को ख़ुद हाँक कर आप रज़ियल्लाहु अन्हो चरागाह में लेकर जा रहे थे कि कहीं इधर उधर गुम न हो जाएं। संयोग से हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने जब देखा तो कहा कि यह काम हम कर लेते हैं, आप रज़ियल्लाहु अन्हो साए में आ जाएं। तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : तुम लोग आराम से साय में बैठो। यह मेरा काम है। यह मैं ही करूँगा। (उद्धरित ओसोदुल ग़ाबा फ़ी मारेफ़तिल सहाब, भाग 3 पृष्ठ 667 उमर बिन अल् ख़त्ताब,

प्रकाशन दारुल फ़िक़्र बेरूत लुबनान 2003 ई.)

इस वाक़िया को हज़रत मुस्लेह मौउद रज़ियल्लाहु अन्हु यूं वर्णन फ़रमाते हैं कि अल्लाह ताआला ने अपने वादे के मुताबिक़ मुस्लमानों को माल दिया, दौलत दी, इज़्ज़त दी, रुत्बा दिया परन्तु वे इस्लाम से ग़ाफ़िल नहीं हो गए। यह वर्णन फ़र्मा रहे हैं कि तुम लोगों में कुछ है तो अपने दीन से ग़ाफ़िल न हो, इस्लाम की शिक्षा से ग़ाफ़िल न हो, अपनी ज़िम्मेदारियों से ग़ाफ़िल न हो। फ़रमाते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैंका एक दफ़ा बाहर क़ुब्बा में बैठा हुआ था और इतनी शदीद गर्मी पड़ रही थी कि दरवाज़ा खोलने की भी हिम्मत नहीं पड़ती थी कि इतने में मेरे ग़ुलाम ने मुझे कहा। देखिए शदीद धूप में बाहर एक व्यक्ति फिर रहा है। थोड़ी ही देर गुज़री थी कि वह व्यक्ति मेरे क़ुब्बा के क़रीब पहुंचा और मैंने देखा कि वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। उनको देखते ही मैं घबरा कर बाहर निकला और मैंने कहा इस गर्मी में आप रज़ियल्लाहु अन्हो कहां? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाने लगे कि बैतुल माल का एक ऊंट गुम हो गया था जिसकी तलाश में मैं बाहर फिर रहा हूँ। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने आगे लिखा है कि अल्लाह ताआला फ़रमाता है कि عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ वे होंगे तख़्तों पर परन्तु हर वक़्त निगरानी उनका काम होगा। दुनिया की नेअमतें और दुनिया के आराम उनको सुस्त नहीं बनाएँगे। वे उस सिहासन के अंदर सौ न रहे होंगे बल्कि बेदार और होशयार होंगे। लोगों के हुक़ूक़ की देख-भाल करेंगे और अपने फ़रायज़ मंसबी को पूरी ख़ुश-उस्लूबी से अदा करते चले जाऐंगे।

(उद्धरित तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 8 पृष्ठ 315-314)

समानता के क़ियाम के बारे में रिवायत आती है। सईद बिन मसीब से मर्वी है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास एक यहूदी और एक मुस्लमान लड़ते हुए आए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को यहूदी की तरफ़ हक़ मालूम हुआ तो उन्होंने उसके अनुसार फ़ैसला किया। फिर यहूदी बोला अल्लाह की क़सम तुमने सच्चा फ़ैसला किया है। (मौता इमाम मालिक, किताब अल् कज़िया, बाब अल् तरग़ीब फ़ील क़ज़ा बिलहक़, रिवायत नंबर 1425 प्रकाशन दारुल फ़िक़र 2002 ई.)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मिस्र का एक व्यक्ति हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया और उसने कहा हे अमीर-उल-मोमिनीन मैं ज़ुलम से आप रज़ियल्लाहु अन्हो की पनाह चाहता हूँ। फ़रमाया : तू ने अच्छी पनाह-गाह ढूंढी है। उसने कहा मैंने अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु के बेटे के साथ दौड़ में मुक़ाबला किया और मैं उससे आगे निकल गया। इस पर वे मुझे कोड़े मारने लगा और कहा मैं सम्मानित व्यक्ति का बेटा हूँ। तुम्हें यह साहस किस तरह हुआ कि मेरे से आगे निकलो। यह सुनकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को पत्र लिखा और उन्हें अपने बेटे के साथ हाज़िर होने का हुक्म दिया। हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु आए तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया मिस्री कहाँ है? कोड़ा लो और हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु के इस लड़के को मारो। वह उसे मारने लगा और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़र्मा रहे थे, इस मिस्री व्यक्ति को कह रहे थे कि "सम्मानित व्यक्ति के बेटे को मार।" हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन है कि उसने उसे मारा और हम उसके मारने को पसंद कर रहे थे। वह उसे नियमत कोड़े मारता रहा यहां तक कि हमने तमन्ना की कि अब छोड़ दे। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस मिस्री व्यक्ति से कहा कि अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु के सिर पर मॉरो। तो उस (मिस्री) ने कहा कि हे अमीरुल मोमेनीन उनके बेटे ने मुझे मारा था और मैंने इससे बदला ले लिया है। तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा तुमने कब से लोगों को ग़ुलाम बना रखा है हालाँकि उनकी माओं ने उन्हें आज़ाद पैदा किया है? हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया हे अमीरुल मोमेनीन न मुझे इस वाक़िया का इलम था और न वे मिस्री मेरे पास आया।

(कंज़ुल अम्माल, किताबुल फ़ज़ायल, मुजल्लद 10, रिवायत नंबर 36005 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

एक मर्तबा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास कुछ माल आया और आप रज़ियल्लाहु अन्हो उसे लोगों के मध्य तक़सीम करने लगे। लोगों ने भीड़ लगा दी। हज़रत साद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों का विरोध करते हुए आगे बढ़ गए और आप रज़ियल्लाहु अन्हो तक पहुंच गए। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उन्हें एक कोड़ा लगाया और कहा तुम ज़मीन में अल्लाह के सुलतान से नहीं डरे और भीड़ को चीरते हुए आगे निकल आए तो मैंने सोचा कि तुम को बता दूं कि अल्लाह का सुलतान भी तुम से बिल्कुल नहीं डरता।

(सीरत उमर बिन ख़त्ताब अज़ अली मुहम्मद सलाबी, पृष्ठ 97 दारुल मारूफ़ बेरूत)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु में सब्र और हौसला किस हद तक थी। इस बारे में रिवायत है कि एक मर्तबा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ुतबा देते हुए फ़रमाया। हे लोगो तुम में कोई भी व्यक्ति यदि मुझ मैं टेढ़ापन देखे तो उसे सीधा कर दे। एक आदमी खड़ा हुआ और कहा यदि हम आप रज़ियल्लाहु अन्हो मैं टेढ़ापन देखेंगे तो उसे अपनी तलवारों से सीधा करेंगे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा अल्लाह का शुक्र है कि उसने इस उम्मत में ऐसा भी आदमी पैदा किया है जो उमर के टेढ़े पन को अपनी तलवार से सीधा करेगा। (सीरत उमर बिन ख़त्ताब अज़ मुहम्मद सलाबी, पृष्ठ 106 दारुल मारूफ़ बेरूत)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ुतबा देते हुए फ़रमाया मुझे भलाई का हुक्म देकर, बुराई से रोक कर और मुझे नसीहत करके मेरी मदद करो।

(सीरत उमर बिन ख़त्ताब अज़ अली मुहम्मद सलाबी, पृष्ठ 107 दारुल मारूफ़ बेरूत)

फिर एक अवसर पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मेरे नज़दीक सबसे अधिक पसंदीदा वह व्यक्ति है जो मेरी कमियों से मुझे आगाह करे।

(अल् कुबरा, भाग 3 पृष्ठ 222 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का एक कथन वर्णन किया जाता है कि मुझे ख़ौफ़ है कि मैं ग़लती करूँ और मेरे डर से कोई मुझे सीधा रास्ता न दिखाए।

(सीरत उमर बिन ख़त्ताब अज़ अली मुहम्मद सलाबी, पृष्ठ 107 दारुल मारूफ़ बेरूत)

एक दिन आपके पास एक आदमी आया और सभी लोगों के सामने कहने लगा : हे उमर अल्लाह से डरो। कुछ लोग उसकी बात सुनकर सख़्त ग़ुस्सा हो गए और उसे ख़ामोश कराना चाहा। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उससे कहा तुम में कोई ख़ैर नहीं यदि तुम ऐब को न बताओ और हम में कोई ख़ैर नहीं यदि हम उसको न सुनें। (सीरत उमर बिन ख़त्ताब अज़ मुहम्मद सलाबी, पृष्ठ 107 दारुल मारूफ़ बेरूत) अर्थात उसे कहा केवल यह बात न करो बल्कि निर्धारित करके बताओ कि क्या बात करना चाहते हो।

एक दिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों के मध्य ख़ुतबा देने के लिए खड़े हुए। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने इतना ही कहा था हे लोगो सुनो और इताअत करो कि एक आदमी ने बात काटते हुए कहा हे उमर न हम सुनेंगे और न इताअत करेंगे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस से नरमी से पूछा अल्लाह के बंदे क्यों? उसने कहा इसलिए कि बैतुल माल से जो कपड़ा सब में तक़सीम किया गया उस से लोग केवल क़मीस बनवा सके। जोड़ा मुकम्मल नहीं हुआ और आप रज़ियल्लाहु अन्हो को भी इतना ही कपड़ा मिला होगा। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो का जोड़ा कैसे तैयार हो गया? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहा : अपनी जगह ठहरे रहो और फिर अपने बेटे अब्दुल्लाह को बुलाया। अब्दुल्लाह ने बताया कि उन्होंने अपने पिता को अपने हिस्सा का कपड़ा दिया है ताकि उनका लिबास मुकम्मल हो जाए। यह सुनकर सब लोग संतुष्ट हो गए और उस आदमी ने कहा। हे अमीरुल मोमेनीन अब सुनूँगा और इताअत करूँगा।

(सीरत उमर बिन ख़त्ताब अज़ अली मुहम्मद सलाबी, पृष्ठ 107 दारुल मारूफ़ बेरूत)

कुछ इस किस्म के उजड्ड भी होते थे लेकिन इस किस्म की बातें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जो तर्बीयत याफताह सहाबा थे उनके मुँह से कभी आप नहीं सुनेंगे। ये वही लोग हैं जो देर से मुस्लमान हुए, या फिर बिल्कुल ही उजड्ड, अनपढ़ और जाहिल थे। जो किबार सहाबा थे उनमें ऐसी बातें नहीं पाई जाती थीं उनमें कामिल इताअत होती थी।

इस्लाम मज़हबी उमूर में आज़ादी देता है। इस बारे में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का तरीक़ क्या था । विजय सिकंदरीया के बाद वहां के हाकिम ने हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को संदेश भेजा कि हे अरब के लोगों मैं तुमसे अधिक काबिल-ए-नफ़रत क़ौमों अर्थात अहल-ए-फ़ारस और रुम को जिज़्या अदा करता था। यदि आप पसंद करें तो मैं आपको जिज़्या अदा करने के लिए तैयार हूँ इस शर्त के साथ कि आप मेरे इलाक़े के जंगी क़ैदियों को लौटा दें। हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुं ने दरबार-ए-ख़िलाफ़त में समस्त हालात लिखे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का उत्तर आया कि तुम हाकिम सिकंदरीया के सामने यह तजवीज़ रखो कि वह जिज़्या अदा करे परन्तु जो जंगी क़ैदी तुम्हारे क़बज़े में हैं अर्थात

मुस्लमानों के क़बज़े में हैं उन्हें इख़तियार दिया जाएगा कि वे इस्लाम क़बूल करें या अपनी क़ौम के मज़हब को बरक़रार रखें। जो मुस्लमान हो जाएगा वे मुस्लमानों में शामिल होगा और इसके हुक़ूक़-ओ-फ़रायज़ उन्ही जैसे होंगे अर्थात मुस्लमानों जैसे परन्तु जो अपनी क़ौम के मज़हब पर बरक़रार रहेगा उस पर वही जिज़्या निर्धारित किया जाएगा जो उसके मज़हबों के साथियो पर होगा। इसलिए अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुं समस्त क़ैदियों को जमा किया और उनको फरमान-ए-ख़िलाफ़त पढ़ कर सुनाया गया तो बहुत से क़ैदी मुस्लमान हो गए।

(उद्धरित तारीख़ अलतिबरी, भाग 2, पृष्ठ 512-513 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

मज़हबी आज़ादी में आप किस क़दर सचेत थे। इस बारे में एक वाक़िया है। एक दफ़ा एक बूढ़ी नसरानी महिला अपनी किसी ज़रूरत से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आई तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उससे कहा मुस्लमान हो जाओ महफ़ूज़ रहोगी। अल्लाह ने मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हक़ के साथ भेजा था। उसने उत्तर दिया मैं बूढ़ी महिला हूँ और मौत मेरे क़रीब है। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसकी ज़रूरत पूरी कर दी लेकिन डरे कि कहीं आप रज़ियल्लाहु अन्हो का यह काम उसकी ज़रूरत से ग़लत फ़ायदा उठा कर उसे मजबूर मुसलमान बनाने के मुतरादिफ़ न हो जाए। इसलिए आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस अमल से अल्लाह ताआला से तौबा की और कहा अल्लाह! मैं ने उसे सीधी राह दिखाई थी उसे मजबूर नहीं किया था। बहुत एहतियात थी।

(उद्धरित सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब अज़ डाक्टर अली मुहम्मद अल् सलाबी, पृष्ठ 101 दारुल मारूफ़ बेरूत 2007 ई.)

फिर एक वाक़िया है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का एक ईसाई ग़ुलाम था उसका नाम अश्क़ था उसका वर्णन है कि मैं हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का ग़ुलाम था। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुझ से कहा मुस्लमान हो जाओ ताकि मुस्लमानों के कुछ मुआमलात मैं तुमसे मदद ले लिया करूँ क्योंकि हमारे लिए मुनासिब नहीं कि मुस्लमानों के मुआमले में उन लोगों से मदद लूं जो ग़ैर मुस्लिम हैं लेकिन मैंने इंकार कर दिया, ग़ुलाम ने कहा। तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया لَآ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ दीन इस्लाम में ज़बरदस्ती नहीं। जब आप रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात क़रीब हुई तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुझे आज़ाद कर दिया और कहा तुम्हारी जहां मर्ज़ी हो चले जाओ। (उद्धरित सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो शख़सीत और कारनामे, डाक्टर अली मुहम्मद सलाबी उर्दू, पृष्ठ 184 प्रकाशन अल् फ़ुर्क़ान, मुज़फ़्फ़र गढ़, पाकिस्तान)

जानवरों पर शफ़क़त और रहम दिल्ली का वाक़िया। अह्न्फ़ बिन केस का वर्णन है कि हम उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो के पास एक वफ़द की शक्ल में फ़तह-ए-अज़ीम की ख़ुशख़बरी लेकर आए। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने पूछा आप लोग कहाँ ठहरे हो? मैंने कहा अमुक जगह। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो मेरे साथ चल पड़े। हमारी सवारी के ऊंटों के बाड़े अर्थात उनके बाँधने के स्थान तक पहुंचे और एक एक को ग़ौर से देखने के बाद फ़रमाने लगे क्या तुम अपनी सवारियों के बारे में अल्लाह से ख़ौफ़ खाते! क्या तुम्हें मालूम नहीं कि उनका भी तुम पर हक़ है? उन्हें खुला क्यों न छोड़ दिया कि घास इत्यादि चरते।

(सीरत उमर बिन ख़त्ताब अज़ अली मुहम्मद सलाबी, पृष्ठ 171 दारुल मारूफ़ बेरूत)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक ऊंट देखा जिस पर बेबसी और बीमारी के आसार बिल्कुल नुमायां थे। सालिम बिन अब्दुल्लाह वर्णन करते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो अपना हाथ ऊंट की पुश्त पर एक ज़ख़म के पास रखा और ख़ुद को संबोधित करके कहने लगे कि मैं डरता हूँ कि कहीं तेरे बारे में अल्लाह के हाँ मेरी बाज़पुर्स न हो।

(अल् तब्क़ातुल कुबरा, बाब वर्णन इस्तख़लाफ़ उमर, भाग 3 पृष्ठ 217 दारुल इल्मिया बेरूत)

फिर एक रिवायत असलम से है। वह रिवायत करते हैं कि एक मर्तबा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया मेरे दिल में ताज़ा मछली खाने की इच्छा पैदा हुई। यरफ़ा (हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ग़ुलाम का नाम है) सवारी पर सवार हुआ और आगे पीछे चार मील तक दौड़ा कर एक उम्दा मछली ख़रीद कर लाया। फिर सवारी की तरफ़ मुतवज्जा हुआ और उसे ग़ुसल दिया। इतने में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी आ गए और फ़रमाने लगे चलो यहां तक कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने सवारी को देख कर फ़रमाया। तुम इस पसीने को धोना भूल गए हो जो उसके कान के नीचे है। तुमने उमर की इच्छा पूरी करने के लिए एक जानवर को तकलीफ़ में ग्रस्त कर डाला है। अल्लाह की क़सम! उमर तेरी इस मछली को नहीं चखेगा।

(कंज़ुल अम्माल किताब अलफ़ज़ायल मुजल्लद 10, पृष्ठ 287 रिवायत नंबर 35966 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

एक दफ़ा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गर्मी के मौसम में दोपहर के वक़्त इराक़ से एक वफ़द आया। उस में अहनफ़ बिन केस भी थे। हज़रत उमर अवसर सिर पर पगड़ी बांध कर ज़कात के एक ऊंट को तारकोल इत्यादि लगा रहे थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया! अपने कपड़े उतारो और आओ। इस ऊंट में अमीरुल मोमेनीन की मदद करो। यह ज़कात का ऊंट है। इस में यतीम, विधवा और मिस्कीन का हक़ है। (कन्ज़ुल अम्माल, भाग 3 पृष्ठ 303 किताब ख़ुल्फ़ा मा अल् इमारा/क़िस्म अलअफ़ाल, हदीस 14303 प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का एक यहूदी को एक उत्तर उसके बारे में एक रिवायत है। तारिक़ ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत की कि यहूद में से किसी व्यक्ति ने उनसे कहा : अमीरुल मोमेनीन आप रज़ियल्लाहु अन्हो की किताब में एक आयत है जिसे आप पढ़ते हैं यदि वह हम पर अर्थात यहूद की क़ौम पर नाज़िल होती तो हम उस दिन को ईद मनाते। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा वह कौन सी है? उसने कहा। اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَ اَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا (अल् अल्मायदा : 4) अर्थात आज के दिन मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को कामिल कर दिया है और तुम्हें अपनी नेअमत सारी की सारी अता कर दी है और मैंने तुम्हारे लिए इस्लाम को बतौर दीन के पसंद किया है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उत्तर दिया हमें वह दिन और वह जगह भी मालूम है जहां नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर यह आयत नाज़िल हुई थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस वक़्त जुमा के दिन अर्फ़ात में थे।

(सही अल् बुख़ारी, किताब ईमान, बाब زِيَادَةُ الْاِيْمَانِ وَ نُقْصَانُه, हदीस 45)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस बारे में वर्णन फ़रमाते हैं कि "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से एक यहूदी ने कहा कि क़ुरआन-ए-मजीद में एक आयत है। यदि वह हमारी किताब में उतरती तो हम उस दिन ईद मनाते। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि वह कौन सी आयत है? उसने उत्तर दिया। اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ... الاية۔ आपने फ़रमाया वह दिन तो हमारे लिए दो ईदों का दिन था अर्थात जुमा का दिन और अर्फ़ा के दिन। (उस दिन) यह आयत नाज़िल हुई थी।"

(तफ़सीर कबीर, भाग 4 पृष्ठ 6)

कुछ बुज़ुर्गान हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में वर्णन करते हैं। अशअत से रिवायत है कि मैंने इमाम शौबी को यह कहते हुए सुना। जब लोग किसी मसले में मतभेद करें तो देखो कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस मुआमले में क्या-किया है। क्योंकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बग़ैर मश्वरा के कोई काम नहीं करते थे

(हुल्यातन अल् उलिया, भाग 4 पृष्ठ 304-305 रिवायत 5841प्रकाशन अल् ईमान, प्रथम प्रकाशन 2007)

इमाम शाबी फ़रमाते हैं मैं ने हज़रत कबीसा बिन जाबिर को यह कहते हुए सुना। मैं हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ रहा हूँ। मैंने आपसे अधिक किताब-उल-ल्लाह को पढ़ने वाला और अल्लाह के दीन को समझने वाला और आपसे अच्छा उसकी दरस-ओ-तदरीस करने वाला कोई नहीं देखा। (तारीख़ दमिशक़ अल्कबीर लाबन मुजल्लद 11भाग 21 पृष्ठ 128 दारुल अहया अलतरास् अल् अरबी प्रथम प्रकाशन 2001ई.)

हज़रत हसन बसरी रहमहुल्लाह ने कहा जब तुम अपनी मज्लिस को ख़ुशबूदार बनाना चाहो तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का बहुत वर्णन करो

(सीरत उमर बिन अल् ख़त्ताब अज़ इब्ने जोज़ी, पृष्ठ 217 प्रकाशन मिसृया अल् अज़हर)

मुजाहिद से रिवायत है कि हम आपस में कहा करते थे कि बेशक हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर में शयातीन जकड़े हुए थे। जब आप रज़ियल्लाहु अन्हो शहीद हुए तो शयातीन ज़मीन में कूदने लगे।

(सीरत उमर बिन अल् ख़त्ताब अज़ इब्ने जोज़ी, पृष्ठ 217 प्रकाशन मिसृया अल्

अज़हर)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में आता है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो का शायराना ज़ौक़ भी बहुत था। ख़ुद कविता तो नहीं कहते थे लेकिन कविता सुनते थे, पसंद करते थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ एक सफ़र में निकला। एक रात जब हम चल रहे थे तो मैं उनके क़रीब आया तो उन्होंने अपने पालान के अगले हिस्सा पर एक कोड़ा मार कर ये पंक्तियाँ पढ़ीं।

وَلَمَّا نُطَاعِنْ دُونَهُ وَنُنَاضِلُ كَذَبْتُمْ وَبَيْتِ اللهِ يُقْتَلُ أَحْمَدُ
وَنَذْهَلَ عَنْ أَبْنَائِنَا وَالْحَلَائِلِ وَنُسْلِمُهُ حَتّٰى نُصَرَّعَ حَوْلَهُ

तुम झूठ बोलते हो अल्लाह के घर ख़ाना काअबा की क़सम! हज़रत अहमद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शहीद नहीं हो सकते जब तक कि हम उनकी हिफ़ाज़त के लिए नेज़ा बाज़ी और शमशीर ज़नी के जोहर न दिखाएंगे। हम उन्हें नहीं छोड़ेंगे जब तक कि हम उनके क़रीब जंग करते हुए मारे जाएं और अपने फ़र्ज़ंद और अहल अयाल को भूल जाएं।

وَمَا حَمَلَتْ مِنْ نَاقَةٍ فَوْقَ رَحْلِهَا
أَبَرَّ وَ أَوْفٰى ذِمَّةً مِنْ مُحَمَّدٍ

किसी ऊंटनी ने अपनी पुश्त पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बढ़कर नेकी करने वाला और वादा पूरा करने वाले इन्सान को नहीं उठाया।
(तारीख़ अल् तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 577 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान, 2012 ई.)

एक तारीख़ दान डाक्टर अली मुहम्मद सालाबी अपनी किताब "सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो, शख़्सियत और कारनामे' में शेअर-ओ-शायरी से लगाओ के बारे में लिखते हैं कि ख़ुलफ़ाए राशिदीन में सबसे अधिक शेअर के द्वारा उदाहरण देने वाले हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु थे।

आप रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में कुछ लोगों ने यहां तक लिखा है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो के सामने शायद ही कोई मुआमला आता रहा हो और आप रज़ियल्लाहु अन्हो उस पर कविता न सुनाते रहे हों। वर्णन किया जाता है कि एक दफ़ा आप रज़ियल्लाहु अन्हो नया जोड़ा ज़ेब-ए-तन करके बाहर निकले। लोग आप रज़ियल्लाहु अन्हो को बहुत ध्यान से देखने लगे। इस पर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उन्हें उदाहरण देते हुए यह कविता सुनाई।

وَالْخُلْدُ قَدْ حَاوَلَتْ عَادٌ فَمَا لَمْ تُغْنِ عَنْ هُرْمُزٍ يَوْمًا خَزَائِنُهُ خَلَدُوْا
مِنْ كُلِّ أَوْبٍ إِلَيْهَا رَاكِبٌ يَفِدُ أَيْنَ الْمُلُوكُ الَّتِي كَانَتْ نَوَافِلُهَا

कि मौत के वक़्त हुरमज़ को उसके ख़ज़ानों ने कोई फ़ायदा न दिया और क़ौम आद ने हमेशा आबाद रहने की कोशिश की लेकिन हमेशा न रही। कहाँ गए वह बादशाह जिनके चश्मों घाटों से हर तरफ़ से आने वाला क़ाफ़िला सेराब होता था।

(सीरत उमर बिन अल् ख़त्ताब, शख़्सियत और कारनामे (अनुवादक) अज़ अली मुहम्मद सलाबी, पृष्ठ 333 प्रकाशन मकतब अल् फुर्कान मुज़फ़्फ़र गढ़ पाकिस्तान)

अली मुहम्मद सालाबी लिखते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु उन्ही कविताओं को पसंद करते थे जिनमें इस्लामी ज़िंदगी का जोहर चमकता हो। वह इस्लामी विशेषताओं की अक्कासी करते हों और उनके अर्थ और मुतालिब इस्लाम की शिक्षा के ख़िलाफ़ और इसकी इक़दार से मौताआरिज़ न हों। आप रज़ियल्लाहु अन्हो मुसलमानों को बेहतरीन शेर याद करने पर उभारते और फ़रमाते थे। शेर सीखो। इस में वह खूबियां होती हैं जिनकी तलाश होती है तथा हुकमा की हिक्मत होती है और अच्छी आदतें की तरफ़ राहनुमाई होती है। आप रज़ियल्लाहु अन्हो कविताओं के लाभ के सिलसिला में केवल इतने पर इकतिफ़ा नहीं करते बल्कि उसे दिलों की चाबी और इन्सान के जिस्म में ख़ैर के भावना का मुहर्रिक तसव्वुर करते थे। आप कविता की फ़ज़ीलत और फ़ायदे को इस तरह वर्णन करते हैं कि इन्सान का सबसे बेहतरीन फ़न शेर के चंद काव्य की तख़लीक़ है जिन्हें वे अपनी ज़रूरतों में पेश करता है। उनमें करीम और सख़ी आदमी के दिल को नरम कर लेता है और कमीने व्यक्ति के दिल को अपनी तरफ़ मायल कर है।

जाहिली कवि, ज़माना-ए-जाहिलियत के जो पुराने कवि थे, उनके कलाम को भी इसलिए काफ़ी लगन से याद करते थे कि किताब-ए-इलाही के इफ़हाम-ओ-तफ़हीम से उनका गहिरा ताल्लुक़ है। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया तुम अपने दीवान को हिफ़्ज़ कर लो और गुमराह न रहो। उपस्थितगणों ने आपसे पूछा कि हमारा दीवान कौन सा है तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया दौर-ए-जाहिलियत की कविताएँ हैं। उनमें तुम्हारी किताब अर्थात क़ुरआन-ए-मजीद की तफ़सीर है और तुम्हारे कलाम के अर्थ हैं। आप रज़ियल्लाहु अन्हो का यह फ़रमान आप रज़ियल्लाहु अन्हो के शागिर्द और अनुवादक उल-क़ुरआन अब्दुल्लाह बिन अब्बास के इस विचार शैली से भी सहमत है जिसमें आपने कहा कि जब तुम क़ुरआन पढ़ो और उसको न समझ सको तो उसके मफ़हूम अर्थ अरब के अशआर में तलाश करो क्योंकि शायरी अरबों दीवान का है।

(उद्धरित सीरत उमर बिन अल् ख़त्ताब शख़्सियत और कारनामे (अनुवादक अज़ अली मुहम्मद सलाबी, पृष्ठ 336 प्रकाशन अल् फुर्कान मुज़फ़्फ़र गढ़ पाकिस्तान)

तक़्सीम से पहले के हिंदूस्तान के प्रसिद्ध सीरत निगार अल्लामा शिबली नुमानी अपनी किताब "उल-फ़ारूक़" में आप रज़ियल्लाहु अन्हो की कविता के ज़ौक़ का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि शेर-ओ-शायरी की निसबत जबकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की प्रसिद्धि आम तौर पर कम है। इस में कोई संदेह नहीं कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो शेर बहुत कम कहते थे लेकिन शेर-ओ-शायरी का मज़ाक़ ऐसा उम्दा रखते थे कि उनकी तारीख़ ज़िंदगी में यह वाक़िया हम तर्क नहीं कर सकते। अरब के एक पसिद्ध-ओ-मारूफ़कवि का कलाम कसरत से याद था और समस्त शोअरा के कलाम पर उनकी ख़ास ख़ास आरा थी। साहित्यकारों को साधारणतान तस्लीम है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना में उनसे बढ़ कर कोई व्यक्ति शेअर पढ़ने वाला था।

जाहिज़ ने अपनी किताब "उलब्यान वल्तबीयन" में लिखा है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो आपने ज़माने में सबसे बढ़कर शेअर के जनकारक थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़ौक़-ए-सुख़न का यह हाल था कि अच्छे अशआर सुनते तो बार-बार मज़े ले-ले कर पढ़ते थे। जबकि आप रज़ियल्लाहु अन्हो को कार्यों ख़िलाफ़त की वजह से उन कामों में व्यस्त होने का अवसर नहीं मिल सकता था जबकि चूँकि तिब्बी ज़ौक़ रखते थे इसलिए सैंकड़ों हज़ारों शेअर याद थे। उलमाए अदब का वर्णन है कि उनके हिफ़्ज़ अशआर का यह हाल था कि जब किसी मुआमले का फ़ैसला करते तो ज़रूर कोई शेअर पढ़ते। आप रज़ियल्लाहु अन्हो केवल वे अशआर पसंद करते थे जिनमें ख़ुद्दारी, आज़ादी, शराफ़त-ए-नफ़्स, हमीयत, इबरत के मज़ामीन होते थे। इसी बिना पर उमराए फ़ौज और अज़ला के आमिलों को हुक्म भेज दिया था कि लोगों को अशआर याद करने की ताकीद की जाए। इसलिए हज़रत अबू मूसा अशारी रज़ियल्लाहु अन्हु को यह फ़रमान भेजा कि लोगों को अशआर याद करने का हुक्म दो क्योंकि वह अख़लाक़ की बुलंद बातों और सही राय और अंसाब की तरफ़ रास्ता दिखाते हैं। समस्त ज़िलों में जो हुक्म भेजा था उसके शब्द थे :

अपनी औलाद को तैरना और घोड़ों की सवारी सिखाओ और अच्छी लकोक्तियाँ और अच्छे अशआर याद कराओ। अर्थात इलमी ज़ौक़ भी पैदा करो। इस अवसर पर यह बात भी याद रखने के काबिल है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने शायरी के बहुत से द्वेष मिटा दिए। उस वक़्त समस्त अरब में यह तरीक़ा जारी था कि कवि महिलाों का नाम ऐलानीया अशआर में लाते थे और उनसे अपना इशक़ जताते थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस रस्म को मिटा दिया और इसकी सख़्त सज़ा निर्धारित की। इसी तरह किसी की बुराई करने को एक जुर्म क़रार दिया और हुतेया को जो पसिद्ध बुराई करने वाला था इस जुर्म में कैद किया गया।

(उद्धरित उल-फ़ारूक़ अज़ शिबली नुमानी, पृष्ठ 330 से 333 प्रकाशन अल हरमेन लाहौर 1431हिज्री)

अल्लामा शिबली नुमानी मज़ीद लिखते हैं इस ज़माने का सबसे बड़ा शायर मुत्म्मिम बिन नुव्यराह था जिसके भाई को हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना में हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने ग़लती से क़तल कर दिया था। इस वाक़िया ने उसको इस क़दर सदमा पहुंचाया था कि हमेशा रोया करता और मर्सिया कहा करता था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने मर्सिया पढ़ने की फ़र्माइश की तो उसने चंद अशआर पढ़े। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस से कहा कि यदि मुझे कोई ऐसा मर्सिया कहना आता तो मैं अपने भाई ज़ैद का मर्सिया कहता। उसने कहा हे अमीर-मोमिनीन! यदि मेरा भाई आप रज़ियल्लाहु अन्हो के भाई की तरह मारा जाता अर्थात शहादत की मौत मरता तो मैं कदापि उसका मातम न करता।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हमेशा फ़रमाया करते थे कि मेरे साथ मुतम्मिम जैसा ताज़ियत किसी ने नहीं किया।

(उद्धरित उल-फ़ारूक़ अज़ शिबली नुमानी, पृष्ठ 345 प्रकाशन अल् हरमेन लाहौर 1431 हिज्री)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़ज़ायल और मनाक़िब के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"कुछ वाक़ियात भविष्यवानियों के जिनका एक ही दफ़ा ज़ाहिर होना उम्मीद रखा गया है वह तदरीजन ज़ाहिर हों या किसी और व्यक्ति के माध्यम से ज़ाहिर हों जैसा कि हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह भविष्यवाणी कि क़ैसर और किस्रा के ख़ज़ानों की कुंजियाँ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ पर रखी गई हैं हालाँकि ज़ाहिर है कि भविष्यवाणी के ज़हूर से पहले आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ौत हो चुके थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने न क़ैसर और किसरा के ख़ज़ाना को देखा और न कुंजियाँ देखीं परन्तु चूँकि मुक़द्दर था कि वे कुंजियाँ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को मिलीं क्योंकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का वजूद ज़ली तौर पर जबकि आँजनाब सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वजूद ही था इसलिए वह्यी में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का हाथ पैग़ंबर ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हाथ क़रार गया।"

(आयामुस सुलह, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 14 पृष्ठ 265)

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वर्णन फ़रमाते हैं "यह अक़ीदा ज़रूरी है कि हज़रत सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत फ़ारूक़ उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत दो नूरों वाले रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु सब के सब वाक़ई तौर पर दीन में सच्चे थे। अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्होर रज़ियल्लाहु अन्हु जो इस्लाम के आदम-ए-सानी हैं और एसा ही हज़रत उमर फ़ारूक़ और हज़रत उसमान रज़ी अल्लाह अन्हुमा यदि दीन में सच्चे अमीन न होते तो आज हमारे लिए मुश्किल था जो क़ुरआन शरीफ़ की किसी एक आयत को भी अल्लाह की ओर से होना बता सकते।" (मक्तूबते अहमद भाग 2 पृष्ठ 151 मकतूब नंबर 2 मकतूब बनाम हज़रत ख़ान साहब मुहम्मद अली ख़ान साहब, प्रकाशन रब्वाह)

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "मुझे मेरे रब की तरफ़ से ख़िलाफ़त के बारे में तहक़ीक़ की दृष्टि से शिक्षा दी गई है और मुहक़्क़िक़ीन की तरह मैं इस हक़ीक़त की ते तक पहुंच गया और मेरे रब ने मुझ पर यह ज़ाहिर किया कि सिद्दीक़ और फ़ारूक़ और उसमान (रज़ी अल्लाह अंहो) नेक और मोमिन थे और उन लोगों में से थे जिन्हें अल्लाह ने चुन लिया और जो ख़ुदाए रहमान की इनायात से ख़ास किए गए और अक्सर साहिबान मार्फ़त ने उनके मुहासिन की शहादत दी। उन्होंने बुज़ुर्ग और बरतर ख़ुदा की ख़ुशनुदी की ख़ातिर वतन छोड़े। हर जंग की भट्टी में दाख़िल हुए और मौसिम-ए-गर्मा की दोपहर की तपिश और सर्दीयों की रात की ठंडक की परवाह नहीं की बल्कि नौख़ेज़ जवानों की तरह दीन के मार्गों पर फ़िदा हुए और अपनों और ग़ैरों की तरफ़ मायल न हुए और समस्त संसार के रब की ख़ातिर सबको ख़ैर बाद कह दिया। उनके आमाल में ख़ुशबू और उनके अफ़आल में महक है और यह सब कुछ उनके मुरातिब के बाग़ात और उनकी नेकियों के गुलिस्तानों की तरफ़ रहनुमाई करता है और उनकी बाद-ए-नसीम अपने मुअत्तर झोंकों से उनके इसरार का पता देती है और उनके अनवार अपनी पूरी ताबानियों से हम पर ज़ाहिर होते हैं अत: तुम उनके स्थान की चमक दमक का उनकी ख़ुशबू की महक से पता लगाओ और जल्द-बाज़ी करते हुए बद-गुमानियों की पैरवी मत करो और कुछ रवायात पर तकिया न करो क्योंकि उनमें बहुत ज़हर और बड़ा ग़ुलू है और वे काबिल-ए-एतिबार नहीं होतीं। उनमें से बहुत सारी रवायात और बाला करने वाली आंधी और बारिश का धोखा देने वाली बिजली के मुशाबेह हैं। अत: अल्लाह से डर और उन (रवायात की पैरवी करने वालों में से न बन।"

(सिर्रुल ख़लाफ़ा उर्दू अनुवाद, पृष्ठ 25-26)

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं बख़ुदा अल्लाह ताआला ने शेखेन हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को और तीसरे जो दो नूरों वाले हैं हर एक को इस्लाम के दरवाज़े और ख़ैरुल इनाम मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की फ़ौज के हर प्रथम दस्ते बनाया है। अत: जो व्यक्ति उनकी अज़मत से इंकार करता है और उनकी अकाट्य तर्क को तुच्छर जानता है और उनके साथ अदब से पेश नहीं आता बल्कि उनकी अपमान करता और उनको बुरा-भला कहने के दर पर रहता है और ज़बान दराज़ी करता है मुझे उसके बद-अंजाम और ईमान के नष्ट होने का डर है और जिन्हों ने उसको दुख दिया, उन पर लानत की और बोहतान लगाए तो दिल की सख़्ती और ख़ुदाए रहमान का ग़ज़ब उनका अंजाम ठहरा। मेरा बार बार का अनुभव है और मैं इस का खुले तौर पर इज़हार भी कर चुका हूँ कि इन सादात से द्वेष और कीना रखना बरकात ज़ाहिर करने वाले अल्लाह से सबसे अधिक विमुखता का माध्यम है और जिसने भी उनसे दुश्मनी की तो ऐसे व्यक्ति पर रहमत और शफ़क़त की सब राहें बंद कर दी जाती हैं और इसके लिए इलम आर इर्फ़ान के दरवाज़े खोले नहीं किए जाते और अल्लाह ताआला उन्हें दुनिया की लज़्ज़ात-ओ-शहवात में छोड़ देता है और नफ़सानी इच्छात के गढ़ों में गिरा देता है और उसे अपने आस्ताने से दूर रहने वाला और वंचित कर देता है।

उन्हें अर्थात ख़ुलफ़ाए राशिदीन को इसी तरह अज़ीयत दी गई जिस तरह नबियों को दी गई और उन पर लानतें डाली गईं जिस तरह मुर्सलों पर डाली गईं इस तरह उनका रसूलों का वारिस होना साबित हो गया और क़यामत के दिन उनका प्रतिफल जाती और कौम के मुखिया जैसी प्रमाणित हो गई क्योंकि जब मोमिन पर किसी क़सूर के बग़ैर लानत डाली जाए और काफ़िर कहा जाए और बिला-वजह उसकी बुराई की जाए और उसे बुरा-भला कहा जाए तो वह अम्बिया के मुशाबेह हो जाता है और अल्लाह के बर्गुज़ीदा बंदों की मानिंद बन जाता है। फिर उसे बदला दिया जाता है जैसा नबियों को बदला दिया जाता है और मुर्सलों जैसा प्रतिफल पाता है। यह लोग बिला-शुबा हज़रत ख़ैरुल अम्बिया की अनुसरण में अज़ीम स्थान पर फ़ायज़ थे और जैसा कि बुज़ुर्ग-ओ-बरतर अल्लाह ने उनकी प्रशंसा फ़रमाई वह एक आला अमित थे और उसने ख़ुद अपनी रूह से उनकी ऐसी ही सहयता फ़रमाई जैसे वह अपने समस्त बर्गुज़ीदा बंदों की सहयता फ़रमाता है और फ़िल-हक़ीक़त उनके सिदक़ के अनवार और उनकी पाकीज़गी के आसार पूरे जोश से ज़ाहिर हुए और यह खुल कर वाज़िह हो गया कि वे सच्चे थे और अल्लाह उनसे और वे उस से राज़ी हो गए और उसने उन्हें वे कुछ अता फ़रमाया जो दुनिया जहान में किसी और को नहीं दिया गया। (उद्धरित सिर्रुल खिलफ़ा, उर्दू अनुवाद,पृष्ठ 28 से 30)

फिर आप अलैहिस्सलाम शीया हज़रात की एक बात को रद्द करते हुए फ़रमाते हैं "शीया हज़रात में से जो ये ख़्याल करता है कि (अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो) सिद्द्दीक या (उमर फ़ारूक रज़ियल्लाहु अन्हो) ने (अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो या (फ़ातमा) अल् ज़ोहरा के हुक़ूक़ को नष्ट किया और उन पर ज़ुलम किया तो ऐसे व्यक्ति ने इन्साफ़ को छोड़ा और ज़्यादती से प्यार किया और ज़ालिमों का मार्ग इख़तियार की। नि:संदेह वे लोग जिन्हों ने अल्लाह और उसके रसूल की ख़ातिर अपने वतन-ए-अज़ीज़ दोस्त और माल-ओ-मता छोड़े और जिन्हें कुफ़्फ़ार की तरफ़ से कष्ट दिया गया और जो शर पसंदों के हाथों बे-घर हुए परन्तु (फिर भी) उन्होंने अच्छे और नेक लोगों की तरह सब्र किया और वे ख़लीफ़ा बनाए गए तो उन्होंने (फिर भी) घरों को दोलत से न भरा और न अपने बेटों और बेटियों को सोने और चांदी का वारिस बनाया बल्कि जो कुछ हासिल हुआ वह बैतुल माल को दे दिया और उन्होंने दुनिया-दारों और गुमराहों की तरह अपने बेटों को अपना ख़लीफ़ा नहीं बनाया। उन्होंने इस दुनिया में ज़िंदगी ग़रीबी और तंगदस्ती की हालत में बसर की और वे उमरा और रसा की तरह नाज़-ओ-नेअमत की तरफ़ मायल नहीं हुए। क्या उनके बारे में यह ख़्याल किया जा सकता है कि वे बल प्रयोग करके लोगों के धन छीनने वाले थे और हक़ छीनने वाले, लूट मार करने और ग़ारतगरी की तरफ़ मीलान रखने वाले थे। क्या सुरूर-ए-कायनात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सोहबत क़ुदसिया का यह प्रभाव था? हालाँकि अल्लाह समस्त कायनात के रब ने उनकी प्रशंसा की।

हक़ीक़त यह है कि (अल्लाह)ने उनके नफ़ूस का तज़किया फ़रमाया और उनके दलों को पाकीज़गी बख़शी और उनके वजूदों को मुनव्वर किया और आगे आने वाले पाक-बाज़ों का अनुसरण बनाया और हम कोई कमज़ोर एहतिमाल और सतही ख़्याल भी नहीं पाते जो उनकी नीयतों के फ़साद की ख़बर दे या उनकी अदना बुराई की तरफ़ इशारा करता हो जबकि उनकी ज़ात की तरफ़ ज़ुलम मंसूब करने का कोई पुख़्ता इरादा करे। बख़ुदा बे इन्साफ़ करने वाले लोग थे। यदि उन्हें माल-ए-हराम की वादी भी दी जाती तो वे उस पर थूकते भी नहीं और न ही हरीसों की तरह उसकी तरफ़ मायल होते ख़ाह सोना के पहाड़ों जितना या सात ज़मीनों जितना होता। यदि उन्हें हलाल माल मिलता तो वे ज़रूर उसे (ख़ुदा) के मार्ग और दीनी मुहिम्मात में ख़र्च करते। अत: हम यह कैसे ख़्याल कर सकते हैं कि उन्होंने चंद दरख़्तों की ख़ातिर (फ़ातम ज़ोहरा रज़ियल्लाहु अन्हा) को नाराज़ कर दिया और जिगर गोश नबी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को शर पसंदों की तरह अज़ीयत दी बल्कि शुरफ़ा नेक नीयत होते और हक़ पर साबित-क़दम होते हैं और अल्लाह की तरफ़ से उन

पर रहमतें नाज़िल होती हैं और अल्लाह मुत्तक़ियों के बातिन को ख़ूब जानता है।"

(सिर्रुल खिलफ़ा, उर्दू अनुवाद, पृष्ठ 37 से 39)

फिर आप हैं "सच्च तो यह है कि (अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो) सिद्दीकी रज़ियल्लाहु अन्हो और (उमर) फ़ारूक रज़ियल्लाहु अन्हो दोनों बड़े सहाबा में से थे। उन दोनों ने अदायगी हुक़ूक़ में कभी कोताही नहीं की। उन्होंने तक़्वा को अपनी राह और अदल को अपना उद्देश्य बना लिया था। वे हालात का गहिरा जायज़ा लेते और असरार की ते तक पहुंच जाते थे। दुनिया की इच्छा की प्राप्ति कभी भी उनका उद्देश्य नहीं थी। उन्होंने अपने नफ़ूस को अल्लाह की इताअत में लगाए रखा। कसरत-ए-फ़्यूज़ और नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दीन की सहयता में शेख़ीन (अर्थात अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और उमर रज़ी अल्लाह अन्हुमा) जैसा मैंने किसी को न पाया। ये दोनों ही आफ़ताब उम्मत के सरदार (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के अनुसरण में महताब से भी अधिक तेज़ हरकत करने वाले थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत में फ़ना थे। उन्होंने हक़ के हुसूल की ख़ातिर हर तकलीफ़ को मीठा जाना और उस नबी की ख़ातिर जिसका कोई सानी नहीं, हर ज़िल्लत को ख़ुशी ख़ुशी गवारा किया और काफ़िरों और मुनकिरों के लश्करों और काफ़िरों से मुठभेड़ के वक़्त शेरों की तरह सामने आए यहां तक कि इस्लाम ग़ालिब आ गया और दुश्मन की जमईयतों ने कष्ट उठाया। शिर्क छट गया और उस का अंत हो गया और मिल्लत-ओ-मज़हब का सूरज जगमग-जगमग करने लगा और मक़बूल दीनी ख़िदमत बजा लाते हुए और मुस्लमानों की गर्दनों को लुतफ़-ओ-एहसान से उपर निचे करते हुए उन दोनों का अंजाम ख़ैर मुर्सेलीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हम-साएगी पर आधारित हुआ और यह इस अल्लाह का फ़ज़ल है जिसकी नज़र से संयमी पोशीदा नहीं और बेशक फ़ज़ल अल्लाह के हाथ में है और वे जिसे चाहता है अता फ़रमाता है। जो व्यक्ति बकमाल शौक़ अल्लाह के दामन से जुड़े हो जाता है तो वे उसे कदापि ज़ाए नहीं करता, चाहे दुनिया-भर की हर चीज़ उसकी दुश्मन हो जाए और अल्लाह का तालिब किसी नुक़्सान और तंगी का मुँह नहीं देखता और अल्लाह सादिक़ों को बे-यार-ओ-मददगार छोड़ता।

अल्लाहु-अकबर उन दोनों (अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और उमर रज़ियल्लाहु अन्हु) के सिदक़-ओ-ख़ुलूस की क्या बुलंद शान है! वे दोनों ऐसे (मुबारक) मदफ़न में दफ़न हुए कि यदि मूसा अलैहिस्सलाम और ईसा अलैहिस्सलाम ज़िंदा होते तो वहां दफ़न होने की तमन्ना गर्व के रूप में करते लेकिन यह स्थान केवल इच्छा से तो हासिल नहीं हो सकता और न केवल इच्छा से अता किया जा सकता है बल्कि यह तो बारगाह रब की तरफ़ से एक अज़ली रहमत है और यह रहमत केवल उन्ही लोगों की तरफ़ रुख करती है जिनकी तरफ़ इनायत (इलाही) स्वंय से मुतवज्जा हो। (यही लोग हैं) जिन्हें अंजाम-कार अल्लाह के फ़ज़ल की चादरें ढाँप लेती हैं।"

(सिर्रुल खिलाफ़ा, उर्दू अनुवाद, पृष्ठ 77 से 79)

फिर आपन फ़रमाते हैं: "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद जो कुछ इस्लाम का बना है वे अस्हाब-ए-सलासा से ही बना है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने जो कुछ किया है वे जबकि कुछ कम नहीं परन्तु उनकी कार्यवाईयों से किसी तरह सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हो का अपमान नहीं हो सकता क्योंकि का सफलता की पटरी तो सिद्दीक़ अकब रज़ियल्लाहु अन्हो ने ही जमाई थी और अज़ीमुश्शान फ़ित्ना को उन्होंने ही दूर किया था। ऐसे वक़्त में जिन मुश्किलात का सामना हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को पड़ा वे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को कदापि नहीं पड़ा। अत: सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने रस्ता साफ़ कर दिया तो फिर इस पर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़ुतूहात का दरवाज़ा खोला।"

(मलफ़ूज़ात, भाग 6 पृष्ठ 414-415)

फिर हज़रत मौलवी अब्दुलकरीम साहब रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिल की कैफ़ीयत के बारे में लिखते हैं जो आप अलैहिस्सलाम के दिल में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और शेख़ीन हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और उमर की मुहब्बत और इज़्ज़त की थी कि "एक दफ़ा एक दोस्त ने जो मुहब्बत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम में फ़ना शूदा थे। आपकी ख़िदमत में अर्ज़ किया कि क्यों ना हम आप अलैहिस्सलाम को मदारिज शेखेंन रज़ियल्लाहु अन्हो'' अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्होर और हज़रत उमर "से अफ़ज़ल समझा करें और रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़रीब क़रीब मानें? अल्लाह अल्लाह इस बात को सुन कर हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम' अर्थात मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम'' का रंग उड़ गया और आपके सरापा पर अजीब बेचेनी तारी

पृष्ठ 1 का शेष

ऊपर उठाया है।

मेरे नज़दीक इस प्रश्न का उत्तर इस तर्तीब को समक्ष रख कर दिया जा सकता है जो मैंने पिछली आयतों में बताई है। मूल विषय जैसा कि मैं बता चुका हूँ यह था कि क्या ख़ुदा तआला को किसी इल्हाम भेजने की ज़रूरत है? मुशरिक लोग अपने उपास्यों के बारे में यह ज़ाहिर करते थे कि उनके उपास्य इसलिए इल्हाम नाज़िल नहीं करते कि यह उनकी शान के ख़िलाफ़ है। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यह नहीं बल्कि वह ऐसा कर ही नहीं सकते। न उन्होंने कोई दुनयावी नेअमत इन्सान को दी है न दीनी नेअमत देने की तौफ़ीक़ है। फिर तुम किस तरह समझते हो कि ख़ुदा तआला भी उन्हीं की तरह हो जाए हालाँकि इस में तो इल्हाम भेजने की ताक़त है। अत: जिस तरह उसने दुनयावी नेअमतें दी हैं वे रुहानी नेअमतें भी देता है। तुम चाहते हो की वह भी तुम्हारे ख़्याली उपास्यों की तरह बेबस हो कर बैठ जाए परन्तु वह तो ज़िन्दा ख़ुदा और ताक़तवर है और उसने हज़ारों सामान दुनयावी तरक़्क़ी के पैदा किए हैं। अत: वह तुम्हारे माबूदों की तरह रुहानी तरक़्क़ी के तरीक़ बताने में क्यों कोताही करे। तुम्हारे उपास्यों का ऐसा न करना उनकी ऊँची शान के कारण से नहीं बल्कि माज़ूरी के कारण से है और ख़ुदा तआला माज़ूर नहीं इस लिए वह कलाम भेजता रहा है और भेजता रहेगा इसलिए अगली आयत भी उन्ही अर्थों की तसदीक़ करती है।

अर्थात अल्लाह तआला की नेअमतें गिनना चाहो तब भी गिन नहीं सकते। फिर जिस तरह उसने यह दुनयवी नेअमतें नाज़िल की हैं क्यों रूहानी नेअमतें नाज़िल न करे और झूठे उपास्यों की तरह जो कोई ताक़त नहीं रखते गूँगा हो कर बैठ रहे।

दूसरे फ़रमाया कि ग़फ़ूर रहीम है, यदि वह हिदायत न भेजे तो कमज़ोरों की माफ़ी और योग्य लोगों की इज़्ज़त के बढ़ाने के सामान किस तरह पैदा हो सकते हैं। अगर वह हिदायत भेजने से कोताही करे तो साथ ही उसकी ग़फ़ूर और रहीम की विशेषता भी स्थगित हो जाती हैं। अत: वह ऐसा नहीं कर सकता।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4, पृष्ठ 148 प्रकाशन 2010 क़ादियान)

हो गई।'' कहते हैं कि "मैं ख़ुदा की क़सम खा कर कहता हूँ कि इस घड़ी ने मेरा ईमान हुज़ूर इकदस की निसबत और भी अधिक कर दिया। आप अलैहिस्सलाम ने बराबर छ: घंटे कामिल तक़रीर फ़रमाई। बोलते वक़्त मैंने घड़ी देख ली थी और जब आप अलैहिस्सलाम ने तक़रीर ख़त्म की जब भी देखी। पूरे छ: हुए। एक मिनट का फ़र्क़ भी न था। इतनी मुद्दत तक एक मज़मून को वर्णन करना और नियमत वर्णन करना एक ख़रक़-ए-आदत था। इस सारे मज़मून में आप रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की विशेषताओं और गुणों और अपनी गुलामी और कफ़्श बरदारी की निसबत हुज़ूर अलैहिस्सलाम से और जनाब शेख़ीन अलैहिस्सलाम'' (हज़रत अबू बकर और उमर) के फ़ज़ायल वर्णन फ़रमाए और फ़रमाया। "मेरे लिए यह काफ़ी गर्व है कि मैं उन लोगों का मद्दाह और ख़ाक-ए-पा हूँ।"

जो फ़ज़ीलत ख़ुदा ताआला ने उन्हें बख़शी है वह क़ियामत तक कोई और व्यक्ति नहीं पा सकता। कब दुबारा मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दुनिया में पैदा हों और फिर किसी को ऐसी ख़िदमत का अवसर मिले जो जनाब शेख़ीन अलैहिस्सलाम'''(हज़रत अबू बकर और हज़रत उमर)'' को मिला।"

(मलफ़ूज़ात, भाग 1 पृष्ठ 326)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन यहां से ख़त्म होता है अर्थात कि ख़ुत्बों में। इन शा अल्लाह आइन्दा अल्लाह ताआला ने तौफ़ीक़ दी तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन शुरू होगा।

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

पृष्ठ 2 का शेष

अफ़ग़ानिस्तान और इराक़ पर बमबारी करें तो इस कार्रवाई को मसीही दहश्तगर्दी नहीं कहा जाता। यदि जनरल डायर जलियांवाला बाग़ में सैंकड़ों भारतियों को गोलीयों से कतल कर दे तो उसे भी ईसाई दहश्तगर्दी का नाम नहीं दिया जाता।

अत: इस वज़ाहत के बाद कुछ अनपढ़ मुस्लमानों की तरफ़ से अपनी नादानीया किसी के उकसाने पर क़तल-ओ-ग़ारत करना किसी भी सूरत में इस्लाम की तरफ़ मंसूब करना मुनासिब नहीं है।

जमाअत अहमदिया मुस्लिमा की तरफ़ से जिहाद के सम्बन्ध में इस वज़ाहत के साथ इन आयतें की वज़ाहत पेश की जा रही है जो कि दरख़ास्त दहिंदा ने अपनी दरख़ास्त में पेश की हैं।)

नीचे दरख़ास्त देने वाले की तरफ़ से पेश की गई आयतों का अरबी मूल, उस का अनुवाद और फिर व्याख्या प्रस्तुत है

आरोप आयत नम्बर 2(a)

فَإِذَا انْسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَخُذُوهُمْ وَاحْصُرُوهُمْ وَاقْعُدُوا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَخَلُّوا سَبِيلَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ

(सूरत अत्तौबा ,सूरत नम्बर 9 आयत नम्बर 5)

अनुवाद: अत: जब हुर्मत वाले महीने गुज़र जाएं तो जहां भी तुम (वादा तोड़ने वाले) मुशरिकों को पाओ तो उन से लड़ो और उन्हें पकड़ो और उनका घेराव करो और हर कमीन गाह पर उन की घात में बैठो। अत: अगर वे तौबा करें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात अदा करें तो उनकी राह छोड़ दो। अवश्य अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार रहम करने वाला है

दरख़ास्त देने वाले की तरफ़ से पेश की गई आयात नम्बर 2a,2b,2d,2f,2i,2k ,2n,2o,2p,2s,2w,2x,2z में वर्णित नम्बरों के अधीन जिन आयतों को वर्णन कर के क़ुरआन-ए-मजीद और इस्लाम की तरफ़ जो बहुत बुरे आरोप सम्बन्धित किए हैं उनसे साबित होता है कि इस व्यक्ति ने जानबूझ कर इन कारणों को नज़रअंदाज कर दिया है जो इन आयत के क़ुरआन-ए-मजीद में वर्णन का कारण बनें। वर्णन की गई आयतों का सम्बन्ध सय्यदना हज़रत मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मुस्लमानों के इस ज़माने से है जबकि वह कुफ़्फ़ार मक्का की तरफ़ से मुस्लमानों पर लादी जाने वाली जंगों से अपना बचाओ अपनी हिफ़ाज़त और अपनी प्रतिरक्षा के लिए जंग लड़ने पर विविश किए गए थे। दरख़ास्त देने वाले और उसका साथदेने वाले ज़रा ग़ौर करें कि एक मक्का मुकर्रमा का आदमी अपना घर-बार ज़मीन जायदाद कारोबार व्यापार मजबूर होकर छोड़कर अढ़ाई सौ मील दूर यसरिब (मदीना मुनव्वरा)में अपनी नई ज़िंदगी शुरू करने के लिए हिजरत कर जाता है और यह दुश्मन अपनी तलवार के साथ मदीना पहुंच कर उसे समाप्त करना चाहते हैं। कोई बुद्धि रखने वाला इन्सान यह बताए क्या ऐसी हालत में इस अत्याचार को अपनी बका और अपने धर्म की सुरक्षा के लिए प्रतिरक्षा का अधिकार नहीं ??? दुनिया के हर सभ्य और इंसाफ़ पसन्द करने वाले इन्सान का इस सवाल के जवाब में यही विचार होगा कि यहां इन अत्याचारों को अपने प्रतिरक्षा का पूरा अधिकार था। यही वह हक़ है जिस पर इस्लाम के दुश्मन पिछली चौदह सदियों से एतराज़ करते चले आ रहे हैं ।

अब इन आयतों की और अधिक व्याख्या वर्णन है

व्याख्या दरख़ास्त देने वाले ने अपनी दरख़ास्त में जो आयतें वर्णन की हैं इसकी व्याख्या से पहले इस आयत और इसी के क्रम में वर्णित कुछ दूसरी आयतों का तारीख़ी परिपेक्ष्य वर्णन करना उचित लगता है।

इन आयतों का एतिहासिक परिपेक्ष्य यह है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर एक अनुमान के अनुसार 20 अगस्त 610 ई को क़ुरआन-ए-मजीद के नुज़ूल का आरम्भ हुआ और उसके आप ने मक्का वालों को क़बूलीयत इस्लाम की दावत देने का आरम्भ किया। शिर्क तथा अत्याचार इसी तरह गुनाहों मे घिरी हुई ज़िन्दगी से नजात पाने की तरफ़ बुलाया और उन्हें पवित्र साफ़ ज़िन्दगी गुज़ारने की तहरीक की इस हुज़ूर का अपना व्यक्तिगत कोई लाभ नहीं था बल्कि मक्का वाले का ही लाभ था। मक्का वालों में से जो जो इसके लाभ को अनुभव करता जाता इस्लाम स्वीकार करता चला जाताथा और दूसरी तरफ़ क़ुरैश मक्का की अक्सरीयत ने हुज़ूर और आप पर ईमान लाने वालों पर अत्याचार का सिलसिला शुरू कर दिया, उनको दुख और कष्ट पहुंचाने में आन्नद महसूस करने लगे। इस्लाम स्वीकार करने वालों में से एक बिलाल बिन रिबाह थे। दोपहर के समय जबकि ऊपर से आग बरसती और मक्का का पथरीला मैदान भट्टी की तरह तप रहा होता था,उन को बाहर ले जाकर लिटा देते और बड़े बड़े गर्म पत्थर उनके सीने पर रखकर उनको विवश किया जाता कि वह इस्लाम से ताइब हो जाएं मगर वह हमेशा "अहद" "अहद" (अर्थात अल्लाह एक है) कहते रहे और उन अत्याचार को बड़े सब्र और हौसला के साथ बर्दाश्त करते रहे उन्हीं की तरह कुछ दूसरे लोग जिन्होंने इस्लाम को स्वीकार किया उन में अब्बू फ़क़ीह,आमिर बिन फ़ुहैरा इत्यादि शामिल थे। उनको भी इंतिहाई दुख और कष्ट दिए जाते रहे परन्तु ये सब उन मसीबतों को बड़े सब्र तथा धैर्य से बर्दाश्त करते रहे। इस्लामी शिक्षाओं से प्रभावित हो कर मक्का की औरतों ने भी इस्लाम स्वीकार करना शुरू कर दिया। इन में से लुबैना,ज़नीरा,सुमय्या रज़ि पर मक्का के कुफ़्फ़ार ने इतने अत्याचार ढाए कि मक्का के आसपास के पहाड़ों को भी उन की चीख़ों पर तरस आ जाता होगा। अगर उन को बोलने की शक्ति प्राप्त होती तो वह भी कहते हे ज़ालिमो अब बस करो। ज़ुलम तथा अत्याचार अपने चरम को पहुंच गया है। जब अत्याचार बर्दाश्त करते करते तेरह (13) साल गुज़र गए और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़तल करने के लिए इंतिहाई ख़तरनाक मन्सूबा बनाया गया तो अल्लाह तआला ने आपको मक्का से दो अढ़ाई सौ मील दूर यसरिब (मदीना मुनव्वरा) की तरफ़ हिज्रत कर जाने का आदेश दिया। अगर आप चाहते तो मक्का वालों के अत्याचारों को ताक़त से रोक सकते थे और इस का सबूत आपके सहाबी हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि की वह रिवायत है जो गुज़र चुकी है। जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके पीड़ित सहाबा मदीना पहुंच गए तो कुफ़्फ़ार मक्का को चाहिए था कि वह अमन और सुकून से ख़ुद भी जीते और मुस्लमानों को भी जीने देते मगर अफ़सोस ऐसा न हुआ वह उच्च किस्म की तलवारें लेकर मुस्लमानों की गर्दनें उतारने के लिए मदीना की तरफ़ चल पड़े और एक हज़ार (1000) लश्कर का मुक़ाबला तीन सौ तेरह (313) ऐसे असहात मुस्लमानों से हुआ जो बेचारे अपने घर-बार को छोड़कर एक डेढ़ साल पहले मदीना आए थे और यह पीड़ित अभी तो अपने पांव पर खड़े भी न हुए थे और उन के सिरों पर छत भी नहीं थी कि उनकी गर्दनें काटने के लिए मक्का के ज़ालिम बदर के मैदान में पहुंच गए। मुस्लमानों ने कुछ तलवारों ,डंडों और लाठियों से उनका मुक़ाबला किया और अल्लाह तआला ने उन की ग़ैरमामूली सहायता तथा समर्थन फ़रमाया आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा को जंग में नुमायां विजय प्राप्त हुई। इस जंग से भी मक्का के कुफ़्फ़ार ने सबक़ न सीखा और इंतिक़ाम लेने के लिए मुस्लमानों पर निरन्तर हमला करते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने नुमाइंदे भेज कर कुफ़्फ़ार को अमन तथा शान्ति से रहने की नसीहत की। आप ही की कोशिशों के नतीजा में मार्च 628 ई में सुलह का मुआहिदा तय पाया। यह मुआहिदा भी ज़्यादा देर क़ायम न रह सका और मक्का के कुफ़्फ़ार ने मुआहिदे की समस्त शर्तों की पाबन्दी नहीं की आख़िर जब यह मुआहिदा व्याहारिक तौर पर टूट गया आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैिवसल्लम अपने लश्कर के साथ पूरे अमन से मक्का में दाख़िल हुए और उसे फ़तह मक्का के नाम से पुकारा जाता है। मक्का में आप ने इन ज़ालिमों से जो कि तेरह साल मुस्लमानों को निरन्तर कष्ट देते चले आए थे यह सवाल किया "हे क़ुरैश के गिरोह क्या तुम्हें पता है कि तुम्हारे साथ आज क्या व्यवहार होगा? उन्होंने जवाब दिया हम आपसे भलाई के सिवा और क्या आशा कर सकते हैं। अत्यन्त दयालु हज़रत महमुद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आज मैं तुम्हें वही कहूँगा जो हज़रत यूसुफ़ ने अपने भाईयों से कहा था कि आज तुम आज़ाद हो और तुम पर कोई सरज़निश नहीं।"

(उद्धरित सीरतर इब्न हश्शाम)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से वर्णित यह महान क्षमा और माफ़ी के बाद भी कुछ कुफ़्फ़ार और इस्लाम के शत्रु मुस्लमानों को नुक़्सान पहुंचाते रहे और क़तल तथा उपद्रव का का सिलसिला जारी रखा और जब अवस्था इतनी गम्भीर हो गई तो अल्लाह तआला ने आदेश दिया कि

एतराज़ आयत नम्बर 2(a)

فَإِذَا انْسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَخُذُوهُمْ وَاحْصُرُوهُمْ وَاقْعُدُوا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَخَلُّوا سَبِيلَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ

(सूरत अत्तौबा सूरत नम्बर 9 आयत नम्बर 5)

अनुवाद: अत: जब हुर्मत वाले महीने गुज़र जाएं तो जहां भी तुम (अहद-शिकन मुशरिकों को पाओ तो उन से लड़ो और उन्हें पकड़ो और उनका मुहासिरा करो और हर कमीन गाह पर उन की घात में बैठो। अत: अगर वे तौबा करें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात अदा करें तो उनकी राह छोड़ दो। अवश्य अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार रहम करने वाला है

एतराज़ आयत नम्बर 2(b)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 7 Thursday 20 January 2022 Issue No. 3

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

पृष्ठ 1 का शेष

कर और चमत्कार समझी जाती है। वह इन दोनों स्थानों पर अपने रुतबा और दर्जा के दृष्टि से अलग है। इसलिए अल्लाह तआला उसे ऐसी शक्ति प्रदान करता है कि जो उत्तम कर्म हैं और जो उत्तम आचरण हैं। वह कामिल तौर पर और अपने असली रंग में इससे प्रकट होते हैं और बिन किसी संकोच के प्रकट होते हैं। कोई भय और आशा उन नेक कर्मों के प्रकट का कारण नहीं होता है बल्कि वह उसकी फ़ित्रत और तबीयत का एक भाग हो जाते हैं। बनावट उसकी तबीयत में नहीं रहता। जैसे एक सवाल करने वाला किसी व्यक्ति के पास आए तो चाहे उसके पास कुछ हो या न हो, तो उसे देना ही पड़ेगा। यदि ख़ुदा के ख़ौफ़ से नहीं तो सृष्टि के दृष्टि से। परन्तु इस किस्म का दिखावा शहीद में नहीं होता और यह शक्ति और ताक़त उसकी बढ़ती जाती है और जूँ-जूँ बढ़ती है उतनी उसकी तकलीफ़ कम होती जाती है और वह बोझ का एहसास नहीं करता। जैसे हाथी के सिर पर एक चींटी हो तो वह उसका क्या एहसास करेगा।

क्या किसी स्थान पर नमाज़ माफ हो जाती है
"फ़ुतूहात मक्किया" की एक इबारत की व्याख्या

फ़ुतूहात में इस स्थान की तरफ़ इशारा करके एक सूक्ष्म बात लिखी है। और वह यह है कि जब इन्सान कामिल दर्जा पर पहुंचता है, तो उसके लिए नमाज़ साक़ित (माफ) हो जाती है जाहिलों ने इससे यह समझ लिया कि नमाज़ ही माफ़ हो जाती है। जैसा कि कई आज़ाद फ़क़ीर कहते हैं। इन को इस स्थान की ख़बर नहीं और इस सूक्ष्म बात की सूचना नहीं। असल बात यह है कि इब्तिदाई सुलूक के आरम्भिक दर्जो में नमाज़ और दूसरे नेक कर्म एक किस्म का बोझ मालूम होते हैं ओर तबीयत में एक सुस्ती और तकलीफ़ महसूस होती है परन्तु जब इन्सान ख़ुदा तआला से क़ुव्वत पाकर इस स्थान शहीद पर पहुंचता है तो इस को ऐसी ताक़त और सुदृढ़ा दी जाती है कि उसे इन कर्मों में कोई तकलीफ़ महसूस ही नहीं होती। मानो वह इन कर्मों पर सवार होते हैं और रोज़ा, नमाज़, ज़कात, मानव जाति का हमदर्द, उपकारी , सार यह कि समस्त नेक कर्मों और उत्तम आचरण का प्रकटन ईमानी क़ुव्वत से होता है। कोई मुसीबत , दुख और तकलीफ़ ख़ुदा तआला की तरफ़ क़दम उठाने से उसे रोक नहीं सकती। शहीद उसी वक़्त किसी को कहेंगे

पृष्ठ 1 का शेष

يَاأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖٓ اِنْ شَآءَ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ (सूरत अलतौबा ,सूरत नम्बर 9 आयत नम्बर 28)

अनुवाद: हे लोगो जो ईमान लाए हो मुशरिकीन तो अपवित्र हैं। अत: वे अपने इस साल के बाद मस्जिद हराम के क़रीब न फटकें। और यदि तुम्हें ग़ुर्बत का भय हो तो अल्लाह तुम्हें अपने फ़ज़ल के साथ मालदार कर देगा अगर वे चाहे। अवश्य अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) बहुत हिक्मत वाला है

इस आयत की वज़ाहत करते हुए हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे रहमहुल्लाह तहरीर फ़रमाते हैं कि मुशरिकीन के अपवित्र होने से अभिप्राय उन के अक़ीदा की गन्दगी है। शारीकि गन्दगी अभिप्राय नहीं। अत: मुशरिकों को हज से रोकने से अभिप्राय यह है कि उनको अपनी मुशरिकाना रस्मे अदा करते हुए हज न करने दिया जाए क्योंकि ज़माना जाहिलीयत में वह कई बार नंगे हो कर और अपने बुतों इत्यादि को साथ लेकर हज किया करते थे अत: हज़रत इमाम अब्बू हनीफ़ा और दूसरे हनफ़ी फ़ुक़हा के नज़दीक भी मुशरिकीन मुस्लमानों की हर मस्जिद में यहां तक कि मस्जिद हराम में भी दाख़िल हो सकते हैं। अलबत्ता उन्हें वहां अपनी मुशरिकाना रस्मों के साथ हज या उमरा करने की इजाज़त नहीं। अत: लिखा है

لِاَنَّهٗ لَيْسَ الْمُرَادُ مِنْ آيَةِ (اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ) النَّهْيُ عَنْ دُخُوْلِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ، وَاِنَّمَا الْمُرَادُ النَّهْيُ اَنْ يَحُجَّ الْمُشْرِكُوْنَ اَوْ يَعْتَمِرُوا كَمَا كَانُوا يَعْمَلُوْنَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ

(अलफ़िक्का अल्इस्लामिया वा अदिल्लहो, लेखक डाक्टर वहब अलज़हीली भाग नम्बर 6 पृष्ठ 434-435 दारुल फ़िक्र, दमिशक़)

जब उसकी ईमानी क़ुव्वत उससे वह कर्म दिखाती है कि आराम से उन कर्मों का प्रकटन हो। जैसे पानी ऊपर से नीचे को गिरता है। इसी तरह पर शहीद से नेक कर्मों का प्रकटन होता है। शहीद अल्लाह तआला को मानो देखता है और उसकी ताक़तों को देखता है। जब यह स्थान कामिल दर्जा पर पहुंचे तो यह एक निशान होता है

इब्तिला और परीक्षाओं में शहीद का व्यवहार

कई आदमी देखे गए हैं कि जब कोई इब्तिला जाए तो घबरा उठते हैं और ख़ुदा का शिकवा करने लगते हैं। उनकी तबीयत में एक सुस्ती पाई जाती है, क्योंकि वह सम्पूर्ण रूप से सुलह जो ख़ुदा तआला से होना चाहिए, उनको प्राप्त नहीं होता। ख़ुदा तआला से उसे उसी वक़्त तक सुलह रह सकती है जब तक उसकी मानता रहे। यह भी याद रखो कि ख़ुदा तआला का मामला एक दोस्त जैसा मामला है कभी एक दोस्त दूसरे दोस्त की मान लेता है और दूसरे वक़्त उसको इस दोस्त की माननी पड़ती है और यह स्वीकार करना ख़ुशी और दिल की गहराई से होना कि न कि विवशता पूर्ण।

ख़ुदा तआला एक स्थान फ़रमाता وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ (अलबकर:156) अर्थात हम आज़माते रहेंगे । कभी डराकर, कभी भूख से कभी मालों और फलों इत्यादि का नुक़्सान करके। फलों में औलाद भी शामिल है और यह भी कि बड़ी मेहनत से कोई फ़सल तय्यार की और अचानक उसे आग लगी और वह तबाह हो गई। या दूसरे मामलों के लिए मेहनत, मशक़्क़त की,नतीजा में असफल रह गया। अत: विभिन्न प्रकार की परीक्षा और बीमारियां इन्सान पर आती हैं और यह ख़ुदा तआला की परीक्षाएं हैं। ऐसी अवस्था में जो लोग अल्लाह तआला की इच्छा पर राज़ी और उस की तक़दीर के लिए सिर झुका देते हैं। वे बड़े खुले दिल से कहते हैं।اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ(सूरत अलबकर:157) किसी प्रकार का शिकवा और शिकायत ये लोग नहीं करते। ऐसे लोगों के बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है أُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ अर्थात यही वे लोग हैं जिनके हिस्सा में अल्लाह तआला की विशेष रहमत आती है। अल्लाह तआला उन्हीं लोगों को मुश्किलों में मार्ग दिखा देता है। याद रखो अल्लाह तआला बड़ा ही कृपालु और दयालु और उपकार करने वाला है। जब कोई उसकी इच्छा को प्राथमिकता देता है और उसकी मर्ज़ी पर राज़ी हो जाता है तो वह उस को इस का बदला दिए बिना नहीं छोड़ता। अत: यह तो वह स्थान और स्तर है जहां वह अपनी बात मनवानी चाहता है। दूसरा स्थान और स्तर वह है जो उसने اُدْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ (अलमोमिन:61) में फ़रमाया है। यहां वह उसकी बात मानने का वादा फ़रमाता है। अत: शहीद इस पहले स्थान पर खड़ा होता है। अर्थात खुले दिल के साथ उसकी बात मानता है वह दोस्त के रंग को इनाम के रूप में देख लेता है

सालहियत का स्थान

चौथा दर्जा सालहीन का है यह भी जब कमाल के दर्जा पर हो तो एक निशान और चमत्कार होता है। सम्पूर्ण सलेह यह है कि किसी प्रकार का कोई भी फ़साद बाक़ी न रहे। सम्पूर्ण सालिह में किसी किस्म का कोई ख़राब और ज़हरीली बात नहीं होती, बल्कि जब साफ़ और सेहत वर्धक बात उस में हो उस वक़्त सालिह कहलाता है। जब तक सालिह नहीं,अनिवार्य बातें भी सालिह नहीं होते। यहां तक कि मिठास भी उसे कड़वी मालूम होती है। इसी तरह पर जब तक सालिह नहीं बनता और हर किस्म की बुराइयों से नहीं बचता और ख़राब माद्दे नहीं निकलते, उस वक़्त तक इबादतें कड़वी मालूम होती हैं। नमाज़ में जाता है परन्तु उसे कोई लज़्ज़त और आन्नद नहीं आता। वह टक्करें मारकर मनहूस मुहं से सलाम फेर कर विदा होता है, परन्तु मज़ा उस वक़्त आता है जब गंदे मवाद निकल जाते हैं। तो मुहब्बत और ज़ौक़ शौक़ पैदा होता है और इन्साना सुधार इसी दर्जा से शुरू है।

(इतनी तक़रीर के बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दुआ फ़रमाई और जलसा समाप्त हो गया।)

क्ति की ताक़त नहीं है कि इस का मुक़ाबला करे।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 332 से 334 प्रकाशन 2008 ई क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad